दस लाख श्रद्धालुओं तक महाकुम्भ के पवित्र प्रसाद के साथ युगतीर्थ की चेतना पहुँचाने की योजना 2

सोने और कच्चे तेल की तरह मूल्यवान होने की राह पर है पानी 3

न्यायविदों द्वारा चलाया जा रहा है साप्ताहिक जनजागरूकता अभियान 6

भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी विस्तार में बड़ा योगदान दे रहा है देसंविवि. - श्री जे.पी. नड्डा 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news.shantikunj@gmail.com

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 जनवरी 2021

वर्ष : 33, अंक : 13

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 27 दिसम्बर 2020

वार्षिक चंदा : .....₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-

प्रति अंक : .....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/16/2021-23

मन की प्रसन्नता पर निर्भर है वास्तविक सुन्दरता

स्वास्थ्य और सुन्दरता

आजकल सौंदर्य-प्रसाधनों पर करोड़ों रुपये प्रतिदिन व्यय किये जा रहे हैं। बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियों में नये-नये कृत्रिम सौंदर्य बढ़ाने के साधन तथा वस्तुएँ बन रही हैं। बाजार में सौंदर्य-प्रसाधनों का व्यापार जोरों से चल रहा है। लोग भूखे रहकर भी इन सौंदर्य बढ़ाने के तरीकों का प्रयोग कर रहे हैं। बदसूरत से बदसूरत भी इन सौन्दर्य प्रसाधनों को बाजार से खरीदकर अपने को सुन्दर बनाना चाहता है। पर इससे वास्तविक सौंदर्य नहीं बढ़ता। दिखावटी नकली सुन्दरता भले ही बढ़ जाय।

सच्ची सुन्दरता इन कृत्रिम सौंदर्य प्रसाधनों में निहित नहीं है, प्रत्युत वह मनुष्य के उत्तम शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर है। जब तक आपका शरीर अपना निर्धारित कार्य सुचारु रूप से नहीं करता, तब तक सौंदर्य प्रकट नहीं होगा, न ही शरीर में रक्त-प्रवाह ठीक होगा। सुन्दरता वास्तव में स्वस्थ शरीर, स्वच्छ स्वभाव और अकलुष मन का सामूहिक शुभ परिणाम है।

कुरूपता एक मानसिक रोग है, सुन्दरता अच्छे स्वभाव का परिणाम है। स्वास्थ्य और सुन्दरता का गहरा सम्बन्ध है। यदि हम पूर्ण स्वस्थ रहें, प्रसन्न और खिले रहें, तो अधिक से अधिक आकर्षक दिखाई दे सकते हैं, भले ही हमारा रंग कैसा भी हो। साधारण से पुष्प को देखिये, जब वह पूरी तरह खिला हुआ बिहँसता रहता है तो कितना आकर्षक और प्यारा लगता है। साधारण-सा पक्षी भी जब फुदक-फुदककर हर्ष से कलरव करता है तो कितना सुहावना लगता है। कुत्ते, बिल्ली, बकरी-यहाँ तक कि सूअर के छोटे-छोटे अबोध बच्चे उछलते-कूदते बड़े सुन्दर लगते हैं। सुन्दरता, उत्तम स्वास्थ्य, निश्चिन्त जीवन, हर्ष और उल्लास में छिपी हुई है।

इनके अतिरिक्त सुन्दरता को देर तक स्थिर रखने के लिये मधुर और स्वस्थ मानसिक भावों की भी अतीव आवश्यकता है। जिन व्यक्तियों का मन घरेलू, पारिवारिक या सामाजिक कलह संघर्षों या लड़ाई-झगड़ों में उलझा रहता है, गुप्त मन में कोई-न-कोई चिंता या उत्तेजना बनी रहती है, उनके चेहरों पर कर्कशता, क्रोध, आवेश तथा तनाव छाया रहता है। अन्दर की तनी हुई मानसिक स्थिति उनकी मुख-मुद्रा पर उभरकर चेहरे को कुरूप बना देती है। क्रोध, ईर्ष्या, वासना, उत्तेजना, चिन्ताएँ, घृणा आदि वे कुत्सित दुष्ट भावनाएँ हैं, जो मनुष्य को कुरूप और अनाकर्षक बनाती हैं। आन्तरिक दुगुर्णों से कुरूपता उत्पन्न होती है।

देवताओं-महात्माओं का सौंदर्य

हिन्दू देवी, देवताओं, महात्माओं और महापुरुषों के चित्रों और मूर्तियों की मुख-मुद्राओं और उससे उत्पन्न उनकी मानसिक, आन्तरिक-मनःस्थितियों पर ध्यान दीजिये। आप उनमें सर्वत्र सद्गुणों की प्रतिच्छाया पायेंगे। भगवान श्रीकृष्ण के बचपन के चित्र में वे कैसे विहँसते दिखाई देते हैं। वे किलक-किलक कर इधर-उधर घुटनों चल रहे हैं। उनके निर्दोष मनोभाव उनके चेहरे पर प्रकट हो रहे हैं। इसी प्रकार भगवान राम, सीताजी, भरत, शत्रुघ्न इत्यादि सबके चेहरों पर मधुर मुस्कान खेल रही है। सरस्वती, लक्ष्मी, महादेव, विष्णु इत्यादि सबके मुख-मण्डल एक मधुर आभा से प्रदीप्त हैं। बुद्ध भगवान के चेहरे की शान्ति और तृप्ति देखिये। यही तृप्ति, शान्ति, यही मुस्कराहट हमारे सभी देवी-देवताओं के मुख-मण्डल पर दिखाई देती है। हमारे सभी देवी-देवताओं का एक गुण उनका सौंदर्य है, उनकी मृदु और मधुर मुस्कान है। यह एक दैवी गुण है। इसे धारण कर हम देवताओं के समीप पहुँचते हैं।

चेहरे का सौंदर्य मन में छिपा है

हमारे देवताओं तथा महापुरुषों के चेहरे के सौंदर्य का कारण उनके मन में छिपा हुआ है। उनके चेहरे की सरलता, सरसता, हल्की-हल्की मुस्कान पर मानव-मन बार-बार न्यौछावर होने लगता है। कितना सुन्दर, सुखदायक और आँखों को प्रिय लगता है उनका यह मुखमण्डल। यह उनके हृदय की सुन्दरता को प्रकट कर रहा है।

हम सबका मुख-मण्डल आन्तरिक सद्गुणों से आकर्षक बनता है। शील और सद्गुणों का प्रकाश चारों ओर फैलता है। प्रेम, दया, सज्जनता, ईमानदारी, भलाई इत्यादि में गजब का आकर्षण है। अच्छे भावों का अभिनय कीजिये। मुख पर प्रसन्नता, प्रेम, दया और कोमलता प्रदर्शित कीजिये। वैसे ही भावों की गुप्त तरंगें आपके शरीर में सर्वत्र दौड़ जायेंगी। आत्मा प्रसन्न हो जायगी और मुखमुद्रा मोहक बन जायेगी। क्या कारण था कि हमारे देवपुरुषों, महात्माओं के दर्शन से हिंसक जन्तु तक वशीभूत हो जाते थे? सच पूछा जाय, तो यह उनके चेहरे का मोहक भाव ही था।

एक विद्वान लिखते हैं, 'अच्छे-बुरे विचारों की धारा मानसिक केन्द्र से चारों ओर बिखरकर खून के प्रवाह के साथ चमड़ी तक आती है और वहाँ अपना प्रभाव छोड़ जाती है। यदि यह मानसिक विचारधारा निरन्तर आती-जाती रहे तो, उसका प्रभाव भी स्थाई रह जाता है।"

शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष-2021

अंग्रेजी नववर्ष आ रहा है
1 जनवरी 2021 से।
पिछला वर्ष कई त्रासदियों में बीता।
गुरुसत्ता से प्रार्थना है कि यह वर्ष,
जो कि शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष भी है, नूतन संभावनाएँ लेकर आए एवं सबके लिए शुभ हो।

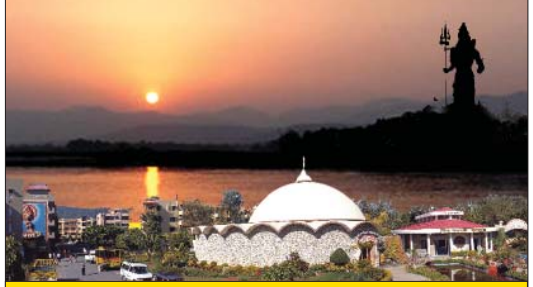

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, गायत्री तपोभूमि-मथुरा, जन्मभूमि आँवलखेड़ा-आगरा, देव संस्कृति विश्वविद्यालय-हरिद्वार, अखण्ड ज्योति संस्थान-मथुरा, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान-हरिद्वार

सुन्दरता के लिए स्वभाव बदलें

शोक का विषय है कि हम केवल अपनी मानसिक दुर्भावनाओं के कारण अपनी मोहनी शक्ति खो बैठते हैं। आपकी आयु, स्थिति या आमदनी चाहे कुछ भी क्यों न हो, आप मन में मधुर देवोचित भाव रखने, उन्हें अपने जीवन और चेहरे पर प्रदर्शित करने का अभ्यास आज से ही प्रारम्भ कीजिये। प्रेम, दया, स्नेह, शान्ति, आनन्द आदि देवताओं-जैसे भावों को ही मन में पूर्ण स्थिर कीजिये। सोते-जागते उन्हें रक्त के प्रवाह के साथ समूचे मन और शरीर में घूमने दीजिये। आप में मोहक शक्ति आयेगी। सभी उससे प्रभावित होंगे।

क्रोध के अनुगामी हैं अन्याय, अविचार, उत्पीड़न, ईर्ष्या, प्रवंचना, कटुभाषण तथा निर्दयता आदि। इनका परित्याग कीजिए, क्योंकि ये बुरे भाव दुर्गुण तथा कुरूपता उत्पन्न करते हैं, जीवन को नरक की प्रताड़ना से परिपूर्ण कर देते हैं।

इसी प्रकार काम वासना के दुर्गुण त्यागिये। ये हैं-परनिंदा अधिक निद्रा, कुलटा स्त्रियों का तथा चरित्रहीन पुरुषों का संग, मद्यपान, मांस-भक्षण, कामोद्दीपक गीतों का गान, गन्दे उत्तेजक साहित्य का अध्ययन, निरुद्देश्य भ्रमण। ये सभी विनाशकारी भाव उत्पन्न कर आपकी मुखाकृति को बिगाड़ते हैं।

मन एक शक्ति केन्द्र है। उसका समूचे शरीर पर राज है। मन में दुःख और चिंताएँ जमी रहेंगी, तो निश्चय ही वे कुरूपता उत्पन्न करेंगी। हमारा स्वास्थ्य और सौंदर्य नष्ट कर देंगी।

सुखद और सुन्दर भावों को मन में रख तथा चेहरे पर उनको प्रदार्शित कर हम निश्चय ही अधिक आकर्षक बन सकते हैं। आप इस क्रिया का अभ्यास करें। हमारे यहाँ भावों के कल्याणकारी रूप को ही मन में धारण करने की प्रार्थना की गई है-

"हे मन की मौज! तू कल्याणकारी स्वरूप को धारण करके हमारे भीतर प्रवेश कर, ताकि जो कुछ तू चाहे, वह पूरा हो (और उससे सबका भला हो) बुरे विचारों को (हम से) दूर रख।" -अथर्ववेद 9/2/25

सदा प्रसन्नता और आनन्द के भव्य विचारों में ही रमण कीजिये। जब आत्मा प्रसन्न रहती है तो शरीर भी स्वस्थ और सुन्दर रहता है। देखिये, प्रसिद्ध मनोविज्ञानवेत्ता श्रीलालजीराम शुक्ल क्या कहते हैं-

"प्रसन्नता शक्ति की परिचायिका है। जिस मनुष्य के अन्दर आध्यात्मिक शक्ति है, वही प्रसन्न रह सकता है। प्रसन्नता स्वयं उस शक्ति की उत्पादिका भी है। जो मनुष्य जितना प्रसन्न रहता है, वह अपना आध्यात्मिक बल उतना ही बढ़ा लेता है। इतना ही नहीं, वह अपनी शारीरिक शक्ति की भी वृद्धि कर लेता है। मन प्रसन्न रहने पर शरीर की अमृत पैदा करने वाली ग्रंथियाँ अपना काम भली प्रकार से करती हैं और शरीर में उन पदार्थों का प्रवाह जारी रखती हैं, जिनसे शरीर अक्षय बना रहता है और बढ़ता है। विरला ही प्रसन्नचित्त मनुष्य रोगी मिलेगा।"

अतः अधिक-से-अधिक आनन्द और प्रसन्नता के सुखद विचारों में निवास कीजिये और सुन्दर बनिये। आत्मा की प्रसन्नता में अक्षय सौंदर्य निहित है। भव्य विचारों से सुन्दर बनिये।

वाङ्मय खण्ड 21-अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवीय मस्तिष्क, पृष्ठ 2.24 से संकलित-सम्पादित

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के साथ शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष का शुभारम्भ

दस लाख श्रद्धालुओं तक महाकुम्भ के पवित्र प्रसाद के साथ युगतीर्थ की चेतना पहुँचाने की योजना

महाकुम्भ की महत्ता

परम पूज्य गुरुदेव ने प्रज्ञा पुराण तृतीय खण्ड के प्रथम अध्याय में कुम्भ मेलों की महत्ता बताई है। श्लोक क्रमांक 1 से 7 में उन्होंने लिखा है :-

एक बार पुण्यदायी कुम्भपर्व पर हरिद्वार क्षेत्र में विशाल पर्व-स्नान का धर्म समारोह हुआ। देशदेशांतरों से अगणित सद्गृहस्थ उस अवसर पर पुण्य-लाभ पाने के लिए एकत्र हुए। साधु-संतों को भी परस्पर मिलजुलकर सामयिक परिस्थितियों के संदर्भ में उपाय खोजने थे, साथ ही अपने संपर्क क्षेत्र के लोगों की समस्यायें सुलझाने एवं सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाने के संदर्भ में राष्ट्र-कल्याणकारी मार्गदर्शन भी करना था। ... इस पर्व आयोजन के बीच महर्षि धौम्य ने सद्गृहस्थों के मार्गदर्शन हेतु एक विशेष सत्र का अयोजन किया।

स्पष्ट है कि कुम्भ में देश-देशांतर के ऋषि, संत, महात्माओं का समागम धर्मतंत्र के परिष्कार, जनमानस के उत्थान एवं सामाजिक-राष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण के लिए हुआ करता है। इसमें संत-महात्मा अपने-अपने क्षेत्रों की समस्याओं का समाधान खोजते हैं और आने वाले सद्गृहस्थों के माध्यम से उन सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाते हैं।

शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष एक विलक्षण संयोग

कुम्भ मेले हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नाशिक में आयोजित होते हैं। प्रत्येक स्थान पर 12 वर्षों के बाद कुम्भ मेलों के आयोजन की परम्परा है। लेकिन इस वर्ष एक विलक्षण संयोग बना है। दैवयोग से इस वर्ष काल गणना और ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति कुछ इस प्रकार रही कि यह कुम्भ हरिद्वार में 11 वर्ष बाद ही 2021 में आयोजित हो रहा है। यह वर्ष युगऋषि की तपःस्थली और इस युग की ज्ञान गंगोत्री शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार का **'स्वर्ण जयन्ती वर्ष'** भी है।

यह महाकुम्भ 14 जनवरी 2021 से 27 अप्रैल 2021 में कोविड-19 संक्रमण की विशेष परिस्थितियों में आयोजित हो रहा है। इन परिस्थितियों में इसका अपने वास्तविक रूप में हो पाना कठिन ही प्रतीत होता है। ऐसे में करोड़ों लोग कुम्भ के प्रत्यक्ष लाभ से वंचित ही रह सकते हैं।

प.पू. गुरुदेव ने शान्तिकुञ्ज की स्थापना युग चेतना विस्तार, धर्मतंत्र से लोकशिक्षण, सामाजिक-राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान, जन-जन के नैतिक उत्थान जैसे उद्देश्यों के लिए की है। इसी योजना के अन्तर्गत शान्तिकुञ्ज के अगं-अवयव के रूप में विभिन्न मण्डलों, शाखाओं, शक्तिपीठों का निर्माण हुआ।

युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव और कुम्भ मेलों का उद्देश्य एक ही है। हम उसे पूरा कर उनके 'इक्कसवीं सदी-उज्ज्वल भविष्य' के सपने को साकार करने के लिए संकल्पित हैं और कटिबद्ध भी। इस दृष्टि से "वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिताः" का उद्घोष करने वाले संत परम्परा के अनुयायी हम गायत्री परिवार के परिजनों के लिए शान्तिकुञ्ज की स्वर्ण जयन्ती और विपरीत परिस्थितियों में आयोजित हो रहा हरिद्वार का कुम्भ मेला एक स्वर्णिम अवसर ही है।

कुम्भ मेले से करोड़ों लोगों की आस्था जुड़ी है। ऋषि परम्परा के अनुयायी हम इस आस्था का पोषण कर सकते हैं और इसके सहारे युग निर्माण के क्रान्तिकारी आन्दोलनों का व्यापक विस्तार भी कर सकते हैं।

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वर्ष के कार्यक्रम वर्षभर चलेंगे। **'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार'** अभियान इनका प्रथम चरण है। लोग हरिद्वार नहीं आ सकते तो क्या हुआ, हम तो माँ गंगा का जल और कुम्भ का संदेश घर-घर पहुँचा ही सकते हैं।

घर-घर तीर्थ स्थापना

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार अभियान के अन्तर्गत युगतीर्थ और महाकुम्भ हरिद्वार को घर-घर पहुँचाने का कार्य 5000 शक्तिपीठों के माध्यम से पूरा होगा। प्रत्येक शक्तिपीठ न्यूनतम 11 गाँवों में और प्रत्येक गाँव के न्यूनतम 24 घरों में तीर्थ स्थापना करायेंगी। यह तीर्थ साहित्य शान्तिकुञ्ज से भेजा जाएगा, जिनमें निम्न वस्तुओं का समावेश होगा।

- **गंगाजल** : पवित्रता, निर्मलता का प्रतीक
- **देवस्थापना** : देवत्व के संचार का प्रतीक
- **गायत्री उपासना एवं यज्ञ विधि (पुस्तक)**
- **पुस्तिका**-आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

प्रशिक्षण की व्यवस्था :

शान्तिकुञ्ज से विशेष टोलियाँ निकलेंगी, जो प्रत्येक उपजोन स्तर पर योजना को क्रियान्वित करने सम्बन्धी एक दिवसीय प्रशिक्षण देंगी। इनमें सम्बद्ध जिलों के सभी शक्तिपीठों, संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

अभियान उद्देश्यपूर्ण हो

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के कार्यक्रम पूरे वर्ष कई चरणों में चलेंगे। **'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार'** उसका प्रथम चरण है। हम इस वर्ष युगऋषि के मिशन का कैसे विस्तार कर सकते हैं, इसे प्रभावशाली और उपलब्धिपूर्ण बना सकते हैं, इसकी समग्र कार्ययोजना बनाकर चलना होगा, तभी हमारे पुरुषार्थ की सार्थकता है।

युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन का लक्ष्य बहुत स्पष्ट है। भूले-भटके समाज को सही राह दिखानी है। जनमानस की आत्मिक शक्तियों का विकास करते हुए उनका आत्मविश्वास बढ़ाना है। जैसे-जैसे हम अपने इस लक्ष्य में सफलता प्राप्त करते जायेंगे, समाज की अनेकानेक समस्याओं का समाधान स्वतः ही होता चला जायेगा।

आज समाज में सर्वत्र अभाव जैसी स्थिति है। देखा जाय तो संसार में रोटी, कपड़ा, मकान जैसी बुनियादी आवश्यकताओं की कोई कमी नहीं है। लेकिन अपने भविष्य के लिए ही नहीं, अपनी कई पीढ़ियों के लिए संचय की प्रवृत्ति ने समाज में अभाव की परिस्थितियाँ और अनेक समस्याएँ पैदा कर दी हैं। यह आस्था और आत्मविश्वास की कमी से उत्पन्न परिस्थिति और मनःस्थिति का ही परिणाम है। ढर्रे की सोच से निकलकर प्रगतिशील सोच के साथ आगे बढ़ने का साहस जन-जन में जगाने की आवश्यकता है। समाज में एक नया वातावरण विकसित कर परस्पर सद्भाव बढ़ाने और सबके हित की सोच को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

गौ, गंगा, गीता, गायत्री और गुरु हमारी संस्कृति के आधार स्तंभ हैं। वस्तुतः ये जीवन के लिए परम आवश्यक महत्त्वपूर्ण प्रेरणाएँ भी हैं, अपने आप में एक संदेश हैं। इनके प्रति लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। गौ आधारित जीवन शैली समग्र समृद्धि का आधार है। गंगा पूजन, आचमन, स्नान आदि से जीवन में देवत्व का संचार होता है और मन निर्मल होता जाता है। गीता ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग का विश्वमान्य श्रेष्ठतम संदेश है। गायत्री संजीवनी है जो इसी दुनिया की काया पलट कर इसे स्वर्ग बनाने जा रही है। सद्गुरु बिना ज्ञान नहीं। वे हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं, जीवन में सन्मार्ग दिखाते हैं।

ऐसे अनेक संदेश हैं, जिन्हें शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष में 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के माध्यम से जनमानस में स्थापित किया जाना है। 'घर-घर यज्ञ, घर-घर संस्कार, घर-घर गंगा, घर-घर हरिद्वार' का अभियान चलाना है।

किन तक पहुँचें? किस प्रकार पहुँचें?

प्रथम अभियान में प्रत्येक शक्तिपीठ को न्यूनतम 11 गाँवों और प्रत्येक गाँव के 24-24 घरों का लक्ष्य दिया जा रहा है। हमारी पहुँच प्रमुख रूप से नये लोगों तक होनी चाहिए। जिन लोगों में अपनी संस्कृति के उत्थान के लिए संवेदनाएँ जाग्रत् हैं, ऐसे प्रभावशाली लोगों एवं भावनाशीलों तक पहुँचने का लक्ष्य हमको रखना चाहिए। तत्पश्चात् शान्तिकुञ्ज के विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से उनसे सतत सम्पर्क बनाए रखकर उन्हें समाज के नवनिर्माण के लिए सहमत एवं सक्रिय बना ही लेना चाहिए।

यह कठिन नहीं है

देखा जाय तो प्रत्येक शक्तिपीठ को दिया गया लक्ष्य बहुत ही छोटा है, परन्तु न्यूनतम लक्ष्य से भी हम 10,00,000 (दस लाख) नए लोगों तक पहुँच सकते हैं। शक्तिपीठें-शाखाएँ और अधिक साहस दिखाएँ तो प्रथम चरण में ही करोड़ों लोगों तक हम अपना संदेश दे सकते हैं। वस्तुतः ऐसा करने से ही हमारा 'घर-घर गंगा, घर-घर हरिद्वार' का लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

समय कम है। अतः सभी शक्तिपीठ/परिजनों को मिलकर अपने-अपने क्षेत्र के अधिकतर लोगों तक 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान के माध्यम से कुम्भ महापर्व और शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वर्ष का संदेश पहुँचाना है।

कार्ययोजनाएँ :

घर-घर कुम्भ की प्रतिष्ठा के अनेक माध्यम हो सकते हैं। इन्हें व्यक्तिगत रूप से भी स्थापित कराया जा सकता है। लेकिन गायत्री परिवार द्वारा किए गए सामूहिक प्रयोग बहुत अधिक प्रभावशाली होते हैं। अतः यह कार्यक्रम भी अपनाए जा सकते हैं-

- गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के साथ।
- कोविड-19 के लिए प्रशासन द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए प्रातःकालीन प्रभात फेरियों के साथ उद्घोषपूर्वक घर-घर तक अपना संदेश पहुँचाना। इसी बीच जो पूर्व में सहमत हैं या सहमत हो रहे हैं, उनके यहाँ संक्षिप्त कर्मकाण्ड के साथ 'कुम्भ के सेट (शान्तिकुञ्ज से भेजे जा रहे)' की स्थापना कराना।
- ज्ञानरथों के साथ जनजागरण यात्राएँ निकालना और स्थापनाओं के साथ लोगों को युग साहित्य के स्वाध्याय के लिए प्रेरित करना।

जनआस्थाओं का पोषण और देवपरिवारों का निर्माण

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान का हमारा लक्ष्य है देव परिवारों का निर्माण। घर-घर होने वाली विशिष्ट स्थापनाओं के साथ इस आशय के संकल्प पत्र भी भेजे जा रहे हैं, जिनके माध्यम से उन्हें नित्य उपासना, साधना, स्वाध्याय, बलिवैश्वदेव यज्ञ, समयदान-अंशदान के लिए प्रेरित-संकल्पित कराया जाना है।

इसके साथ ही जनभावनाओं के पोषण भी जरूरी है। जिनके पास पहुँचें उनसे एक सादे कागज पर सुखी जीवन व उज्ज्वल भविष्य के लिए गायत्री माता एवं गंगा मैया से प्रार्थना को लिखवाई जा सकती है। यदि उनकी कोई कष्ट-कठिनाइयों हो तो उनका भी वर्णन उसमें लिखवाया जा सकता है। यह आश्वासन दिया जा सकता है कि हम आपकी चिट्ठी गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज भेजकर आपकी प्रार्थना गायत्री माता और गंगा मैया तक पहुँचायेंगे। वे अपने बच्चों की पुकार अवश्य सुनती हैं, आपकी भी सहायता करेंगी और सन्मार्ग दिखायेंगी। **प्रार्थना पत्र लेते समय उनसे एक बुराई छोड़ने एवं एक अच्छाई अपनाने की देवदक्षिणा देने का आग्रह जरूर किया जाय। जो परेशान हैं, पीड़ित हैं ऐसे हर व्यक्ति से ऐसी प्रार्थनाएँ लिखवाकर भिजवाई जा सकती हैं, चाहे उनके यहाँ देवस्थापना की जा रही हो या नहीं।**

प्रार्थना में चमत्कारिक शक्ति होती है। गुरुकृपा से उसके सत्परिणामों से हम सब परिचित हैं। जो प्रार्थना पत्र मिलें, उन्हें गुप्त ही रखें और एकत्रित कर श्रद्धेया जीजी के पास शान्तिकुञ्ज भिजवा दें।

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष की योजनाओं का यह प्रथम चरण अपने मिशन को विस्तार देने के साथ क्षेत्रीय शाखाओं को समर्थ एवं सशक्त बनाने के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण है। यह अगली योजनाओं के क्रियान्वयन का सशक्त आधार होगा, जिनकी जानकारी क्रमशः दी जाती रहेगी। आवश्यकता उन्हें पूरी तन्मयता और जिम्मेदारी से इसे क्रियान्वित करने की है। हमारे संकल्प दृढ़ और प्रयास प्रबल हों तो अपनी गुरुसत्ता उन्हें पूरा करने की सामर्थ्य अवश्य प्रदान करती है।

मनुष्य का विशुद्ध मन ही महान तीर्थ है। इसी के माध्यम से स्वर्ग पहुँचा जाता है। - ब्रह्म पुराण 23/3

जनजागरण एवं नवसृजन के केन्द्र हमारे शक्तिपीठ/प्रज्ञा संस्थान

इन दिनों जन्मशताब्दी वर्ष-2026 को ध्यान में रखते हुए अपने समस्त शक्तिपीठ/प्रज्ञा संस्थानों को जनजागरण एवं नवसृजन के आदर्श केन्द्र बनाने की सुनियोजित योजना पर कार्य चल रहा है। प्रज्ञा अभियान के पिछले दो अंकों से इस सम्बन्ध में मार्गदर्शन दिया जा रहा है। प्रस्तुत हैं सुझाव/ध्यानाकर्षण के कुछ अन्य विषय-

प्रज्ञा संस्थानों में एकरूपता हो

एकरूपता समर्पण और संगठन की भावना को दर्शाती है। सेना की वर्दी, स्कूलों में गणवेश एक जैसे ही होते हैं। हमारे केशरिया वस्त्र समाज में हमारी अलग ही पहचान बनाते हैं। इसी तरह हमारे प्रज्ञा संस्थानों में भी एकरूपता दिखाई दे तो उसका जनमानस पर अलग ही अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

हमारे शक्तिपीठ के बैनर, बोर्ड, दीवारों का रंग, चित्र प्रदर्शनियाँ, साज-सज्जा, लैटर पैड जैसे अनेक क्षेत्रों में एकरूपता लाई जा सकती है। सभी प्रज्ञा संस्थानों के ई-मेल आई.डी. एक ही तरह से बनाए जा सकते हैं। विभिन्न मण्डलों के नामों में एकरूपता रखी जा सकती है। शान्तिकुञ्ज का शक्तिपीठ प्रकोष्ठ इन सब विषयों पर कार्य कर रहा है, जिसके अनुसार मार्गदर्शन आगे दिया जाता रहेगा।

वरिष्ठता का अहंकार मिटे

वरिष्ठता, पद-प्रतिष्ठा का अहंकार लोकसेवियों के लिए विषतुल्य है। जहाँ भी यह अहंकार पनपता है वहाँ संगठन टूटते, कमजोर पड़ते दिखाई देते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव ने हमें अपना अंग-अवयव माना है। सबकी योग्यता और क्षमताओं में अन्तर होना स्वाभाविक है। इन योग्यता और क्षमताओं के आधार पर ही संगठन में सबको अलग-अलग दायित्व सौंपे जाते हैं। लेकिन हम सबका लक्ष्य, समर्पण और उत्तरदायित्व तो अपने मिशन के प्रति ही होना चाहिए।

परम पूज्य गुरुदेव ने अपनी पुस्तक 'लोकसेवियों के लिए दिशा बोध में' इसके संदर्भ में अत्यंत स्पष्ट मार्गदर्शन देते हुए अपने कार्यकर्त्ताओं को इस विषपान से बचने के लिए प्रेरित किया है। इस सम्बन्ध में विशेष प्रेरणा-मार्गदर्शन के लिए पाठक नवम्बर 2020 की अखण्ड ज्योति पत्रिका के स्तम्भ 'अपने-अंग अवयवों से' को ध्यान से पढ़ें।

देखा जाता है कि हमारे संगठन में भी अपनी आदर्श परम्परा से हटकर सामाजिक प्रचलनों का पालन हो रहा है और बढ़ता ही जा रहा है। लोग सौंपी गई जिम्मेदारियों के आधार पर अपनी वरिष्ठता-कनिष्ठता की पहचान स्थापित करने के लिए उत्साहित दिखाई देते हैं। विरले ही होते हैं जो वरिष्ठता की पहचान से उपजे अहंकार को पचा पाते हैं अन्यथा यह अहंकार संगठन में विग्रह खड़ा करता ही दिखाई देता है।

यदि हम इस दिशा में सजग हो जायें तो अपने संगठन को दृढ़ता प्रदान कर सकते हैं। अच्छा यही है कि जहाँ तक कोई वैधानिक या अन्य विवशता न हो तब तक हम अपने आपको मिशन का एक सामान्य कार्यकर्त्ता ही अनुभव करें और अपने नाम के साथ किसी भी प्रकार के विशेषण का प्रयोग करने से बचें। परम पूज्य गुरुदेव का बताया एक सूत्र हमें सदैव याद रखना चाहिए-''अपने कार्यों की प्रशंसा आप न करें। यह कार्य आपके सद्गुण स्वयं करा लेंगे।''

विधि-व्यवस्था

- गायत्री परिवार की समस्त इकाइयाँ-प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डल आदि अपने निकटतम शक्तिपीठ/प्रज्ञा संस्थान से सम्बद्ध रहें। इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक शक्तिपीठ/प्रज्ञा संस्थान अपने केन्द्र शान्तिकुञ्ज से और अपने उच्च स्तरीय संगठन से सम्बद्ध रहे। परस्पर जिम्मेदारी और अनुशासनों का ध्यान रखा जाय। अपने से सम्बद्ध सभी इकाइयों के विकास-विस्तार का ध्यान रखना, प्रशिक्षण-प्रोत्साहन आदि आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराना उनकी नैतिक जिम्मेदारी है।
- ट्रस्टियों, परिव्राजकों एवं व्यवस्था-संचालन मण्डलों से जुड़े सभी कार्यकर्त्ताओं का कम से कम एक गायत्री अनुष्ठान एवं 9 दिवसीय साधना शिविर करना अनिवार्य हो।

समय के साथ चलें, टेक्नोलॉजी का उपयोग करें

डिजिटलीकरण पर ध्यान देना आज के समय में सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि हम समय के साथ चले तो अपने अभियान को अनेक गुना प्रभावशाली गति दे सकते हैं। प्रज्ञा संस्थान व्हॉट्सएप, फेसबुक, ट्विटर आदि सोशल मीडिया पर अपना एकाउण्ट बना सकते हैं। ऐसा करने से-

- सूचना और संवाद का तंत्र मज़बूत होगा।
- हमारा संपर्क क्षेत्र बढ़ेगा।
- जन्म दिन, विवाह दिन, पर्व-त्यौहार, संस्कार आदि पर शुभकामना संदेश और समय-समय पर सच्चिंतन प्रदान करने का क्रम जितना अधिक होगा, उतना ही हम अपने अभियान के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित कर सकेंगे।
- युवाशक्ति का मिशन के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।
- पारदर्शिता-प्रामाणिकता बढ़ाई जा सकती है।
- केन्द्र से निरंतर संपर्क बना रहेगा।
- विशेषज्ञों का सतत मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा।
- ऑनलाइन गोष्ठियाँ, प्रशिक्षण जैसे कार्यक्रम हो सकेंगे।
- स्वावलम्बन के अन्तर्गत बने उत्पादों के लिए बाज़ार मिलेगा।

स्वावलम्बन

प्रज्ञा संस्थानों को वर्तमान परम्पराओं से आगे बढ़कर मिशन के आदर्शों के अनुरूप आय के नए स्रोत तलाशने चाहिए। 'स्वालोकम' योजना के अन्तर्गत कुटीर उद्योगों/ स्वावलम्बन को प्रोत्साहित कर हम समाज की दोहरी सेवा कर सकते हैं। एक ओर प्रज्ञा संस्थानों की आय और आत्मनिर्भरता बढ़ेगी तो दूसरी ओर क्षेत्र में स्वदेशी, स्वावलम्बी तंत्र सुदृढ़ होगा। लोगों को रोजगार मिलेगा, देश में आत्मनिर्भरता भी बढ़ेगी। यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री जी के **'वोकल फॉर लोकल'** नारे को चरितार्थ करने की दिशा में भी एक शानदार पहल होगी।

हर क्षेत्र में कुटीर उद्योगों के लिए अनेक तरह की साधन-सामग्रियाँ उपलब्ध हैं। कहीं बाँस के सामान बनते हैं तो कहीं पत्तल-दोने के लिए प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग जड़ी-बूटियाँ और खाद्य सामग्रियाँ पाई जाती हैं, जिनका प्रसंस्करण स्थानीय स्तर पर ही किया जा सकता है। इन प्राकृतिक साधनों का सदुपयोग करते हुए स्वदेशी, स्वावलम्बी समाज की स्थापना पर ध्यान दिया जाय तो समाज की बहुत बड़ी सेवा की जा सकती है। साधना से उभरी शक्ति जब सृजन में लगती और फलती दिखती है तो साधकों की श्रद्धा सहज ही बढ़ती जाती है।

पारिवारिक सम्मेलनों का आयोजन

शक्तिपीठों पर आधे दिन के पारिवारिक सम्मेलनों का आयोजन कर आत्मीयता विस्तार का एक शानदार कार्यक्रम किया जा सकता है। इस प्रकार के प्रयोग पूर्वोत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं।

यह सम्मेलन प्रातः जलपान से लेकर दोपहरकालीन भोजन तक के होते हैं। जलपान के बाद खेलकूद या अन्य मनोरंजक कार्यक्रम होते हैं। विभिन्न मण्डल एवं परिजन अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं। वहीं शक्तिपीठ/शाखाएँ विगत माह का हिसाब प्रतुत करती हैं। कार्यकर्त्ताओं और मण्डलों के उत्कृष्ट कार्य के लिए उन्हें सम्मानित भी किया जाता है।

परस्पर विचार-विमर्श से अगले माह के सामूहिक कार्यक्रमों का निर्धारण कर उनकी जिम्मेदारी बाँट दी जाती है। जिम्मेदारी समूह को दी जाती है। अंत में समूह भोज (अमृताशन) के साथ सम्मेलन का समापन होता है। इस जोन का कार्यभार देखने वाले श्री परमानन्द द्विवेदी जी का कहना है कि यह कार्यक्रम इतने लोकप्रिय हैं कि परिजन इनमें भोजन व्यवस्था का दायित्व उठाने के लिए आगे से आगे तैयार रहते हैं।

जनजागरण के केन्द्र हमारे शक्तिपीठ

गायत्री चेतना केन्द्र, मोडासा

लोकप्रिय तीर्थ

24 गाँव गोद लिये

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात

अभी दो वर्ष पहले ही प्राण प्रतिष्ठित गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा ने लोकमंगल और जनजागरण के कार्यों में एक तीर्थ जैसी प्रतिष्ठा अर्जित कर ली है। इस शक्तिपीठ की सक्रियता का विस्तार 24 गाँवों में है। इन गाँवों में साधना, संस्कार एवं तरह-तरह के सेवाकार्यों की ऊष्मा निरन्तर बनी रहती है।

वस्तुतः गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा का निर्माण परम पूज्य गुरुदेव की संकल्पना के अनुरूप ही हुआ है। यह शाखा कई दशकों से सप्त आन्दोलनों के क्रियान्वयन के साथ युग चेतना का विस्तार कर रही थी। श्री हरेश कंसारा, श्री किरीट सोनी जैसे अगणित युवा स्वयंसेवकों के समर्पण और त्याग ने गायत्री परिवार के प्रति गहन लोकश्रद्धा और प्रतिष्ठा अर्जित की थी। सक्रियता की इस सुदृढ़ बुनियाद पर गायत्री चेतना केन्द्र का निर्माण मोडासा के प्राणवान परिजनों द्वारा किया गया, जो अब उनकी गतिविधियों को और भी प्रभावशाली बनाने में असाधारण योगदान दे रहा है।

मंदिर ही नहीं, जनजागरण केन्द्र

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा के प्रति लोगों की विशेष आस्था इसलिए भी है क्योंकि इसे मंदिर के रूप में नहीं, एक जनजागरण केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। यहाँ लोगों की कष्ट-कठिनाइयों के समाधान की चर्चा होती है, योजनाएँ बनती और क्रियान्वित होती हैं। गाँवों को स्वच्छ, सुन्दर, स्वावलम्बी, व्यसनमुक्त, संस्कारवान बनाने की योजनाएँ चलाई जाती रही हैं। कोरोना संकट काल में भी सोशल मीडिया के माध्यम से लोकमंगल की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के सफल कार्यक्रम चलाए जाते रहे।

- 31 मई 2020 को 'गृहे-गृहे यज्ञ' के राष्ट्रव्यापी अभियान के अन्तर्गत गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा के संपर्क क्षेत्र के 24 गाँवों में 3000 घरों में यज्ञ हुए। इसके लिए सभी को ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया गया था।
- ऑनलाइन गर्भवती बहिनों को निरन्तर प्रेरणा मार्गदर्शन देते हुए गर्भोत्सव संस्कारों के आयोजन का क्रम निरन्तर चल रहा है।
- मोडासा के एक महत्त्वपूर्ण मार्ग का नामकरण 'स्वतंत्रता सेनानी श्रीराम शर्मा आचार्य जी-श्रीराम मत्त मार्ग' रखा गया है।
- शहर के हृदयस्थल में 'श्रीराम शर्मा आचार्य स्वास्थ्य उद्यान' का निर्माण हुआ है। इसमें मिशन की प्रतीक विशाल मशाल तथा नवग्रह वाटिका बनाई गई है, तरह-तरह की जड़ी-बूटियाँ लगाई गई हैं।

द्वितीय वार्षिकोत्सव साधना सप्ताह

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा ने 23 से 30 नवम्बर 2020 की तारीखों में अपनी स्थापना की दूसरी वर्षगाँठ 'वार्षिकोत्सव साधना सप्ताह' के साथ मनाई। इसमें कोरोना संक्रमण की विशेष परिस्थितियों को देखते हुए 24 गाँवों के हजारों लोगों ने सामाजिक उत्कर्ष के लिए संगठित प्रयासों की भावना के साथ जप, मंत्रलेखन, चालीसा पाठ, आरती-पूजा जैसे कार्यक्रम बड़ी श्रद्धा के साथ सम्पन्न किये।

साधना सप्ताह में भागदार साधकों की भावना व प्रार्थना थी-गायत्री चेतना केन्द्र की पवित्रता-दिव्यता में निरन्तर वृद्धि हो, सबमें मनोबल, त्याग, समर्पण और संगठन सशक्तीकरण का भाव बढ़ता रहे। सब स्वस्थ रहें, युगऋषि के विचारों और सनातन ऋषि संस्कृति को अपनाते हुए उसका निरन्तर विस्तार करते रहें।

वार्षिकोत्सव साधना सप्ताह ऑनलाइन ही सम्पन्न हुआ। सभी 24 गाँवों के साधकों को यज्ञ आदि का प्रशिक्षण एवं साधना सम्बन्धी मार्गदर्शन ऑनलाइन ही दिया जाता रहा। सभी कार्यकर्त्ता भाई-बहिनों ने इसमें पूरे मनोयोग से सहयोग किया।

जल प्रबन्धन की प्राचीन परम्पराओं की ओर लौटना होगा

नागपुर। महाराष्ट्र

गायत्री शक्तिपीठ नागपुर में दिनांक 29 नवम्बर 2020 पर वेबिनार हुई, जिसमें कई विशेषज्ञों ने जल प्रबंधन की आवश्यकता और योजनाओं पर अपने विचार साझा किये। जल प्रबंधन विशेषज्ञ श्री योगेन्द्र कुमार गिरी, व्याख्याता ग्राम प्रबंधन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. मदन नानोटी भू.पू. उप संचालक NEERI, डॉ. पवन लाभशेटवार, मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रमुख, जल तकनीकी एवं प्रबंधन, NEERI तथा श्री शरद पारधी, कुलपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार प्रमुख वक्ता थे।

वेबिनार

> बढ़ता जल संकट हमारे अस्तित्व के लिए बड़ी चुनौती है।
> - **श्री योगेन्द्र कुमार गिरी**

अन्य वक्ता एवं संचालकगण

श्री योगेन्द्र कुमार गिरी ने कहा कि पानी जीवन का आधार है। आज पानी के उपयोग एवं उपलब्धता के बीच अन्तर बड़ा होता जा रहा है। यह हमारे अस्तित्व को चुनौती देने वाला संकट है। हम आज नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ियों के सामने बड़ी समस्या उत्पन्न हो जाएगी। उन्होंने कहा कि जल प्रबन्धन के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता 'खेत का पानी खेत में और खेत की मिट्टी खेत में' सूत्र को अपनाने की है। हमें प्राचीन जल संवर्धन परंपराओं की ओर लौटना होगा। खेतों में तालाब, पहाड़ी क्षेत्रों में चेक डेम एवं अन्य जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण कर जल को संग्रहित करना समय की मांग है। उन्होंने पावर पॉइंट प्रज़ेण्टेशन की सहायता से वर्षा जल संरक्षण की तीन 3 विधियाँ 1.छतीय वर्षा जल का संग्रहण 2. सतही प्रवाह जल का संग्रहण एवं 3. भूजल के पुनर्भरण (रीचार्ज) की विधियाँ समझाईं।

डॉ. मदन नानोटी ने बताया कि जल प्रबंधन प्रकृति एवं जैव विविधता (biodiversity) के चक्र को बनाए रखने मे मदद करता है। उन्होंने पानी बचाने को सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य बताया, कहा कि यह सबके संगठित प्रयासों से ही संभव है।

डॉ. पवन लाभशेटवार ने गंगा और गंगाजल की विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गंगा हमारी महान धरोहर है। अन्य नदियों की तुलना में गंगाजल की गुणवत्ता सर्वोत्तम है। इसमें पाए जाने वाले औषधीय गुणों के कारण यह कभी खराब नहीं होता। इसमें मेटल भी कम मात्रा में विद्यमान है। डॉ. पवन जी ने गंगा नदी को प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए नीरी द्वारा किए गए कार्यों का विवरण दिया।

श्री शरद पारधी जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अपने उद्बोधन में उन्होंने प्राचीन ग्रंथों में वर्णित पानी के महत्व एवं जलचक्र पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमें जल संरक्षण के कार्य को मानवता की उत्तम सेवा मानकर करना चाहिए।

श्री दीपक बिडवई वेबिनार के संयोजक थे। कार्यक्रम का संचालन श्री वैशभ बिसेन ने तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री प्रणय शेगावंकर ने किया। श्री सदानंद आंबेकर, डॉ.अनन्य हजारे एवं श्रीराम लालवानी ने अतिथियों का परिचय कराया। श्री सत्यनारायण नुवाल एवं सभी ट्रस्टियों-परिजनों का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

अनायास हुआ एक आश्चर्यजनक प्रयोग

भारी दुर्गंध से मुक्ति दिलाने में बड़ा प्रभावशाली है गोमूत्र

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

भारतीय धर्मशास्त्रों में शारीरिक व्याधियों के निवारण से लेकर किसी स्थान या भूमि को नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त करने के लिए गोमूत्र का उपयोग भी हो रहा है। यह गोमूत्र अब वायू प्रदूषण नियंत्रण खासकर अपशिष्ट पदार्थों के उपयोग वाले उद्योग परिसर से आने वाली भारी दुर्गंध से मुक्ति दिलाने में भी उपयोगी सिद्ध होता दिख रहा है।

2 दिसम्बर 2020 को चित्तौड़गढ़ भास्कर में छपे एक समाचार के अनुसार चित्तौड़गढ़ जिले में यह नवाचार प्रदूषण नियंत्रण मंडल के ही एक अधिकारी ने किया। उनका और पीड़ित इकाई दोनों का कहना है कि प्रतिदिन गोमूत्र छिड़काव के बाद दुर्गंध की समस्या 80 प्रतिशत तक कम हो गई।

चित्तौड़गढ़-कपासन मार्ग पर सिंहपुर के पास जोनी एनवायरो प्रोटेक्शन लिमिटेड 'गेपिल' नामक एक उद्योग परिसंकटमय अपशिष्ट पदार्थों का प्रसंस्करण करता है। इसका उपयोग सीमेंट फैक्ट्रियों के किलन में ईंधन के रूप में होता है। इस इकाई की सबसे बड़ी समस्या है भारी दुर्गंध। हाईवे पर होने से प्रशासन के पास राहगीरों की असहनीय दुर्गंध की शिकायतें आए दिन पहुँचती रहीं। इकाई को कई बार नोटिस मिले। बहुत उपाय किए, पर समस्या हल नहीं हुई।

प्रदूषण नियंत्रण मंडल क्षेत्रीय अधिकारी श्री शरद सक्सेना गत अगस्त में वहाँ निरीक्षण पर पहुँचे। वे गोशालाओं में भी जाते रहे हैं और वहाँ की गंध से परिचित हैं। इस समस्या के हल के लिए अनायास ही उन्होंने एक उपाय किया। अपनी उपस्थिति में ही गोमूत्र मँगवाया और अपशिष्टों पर छिड़कवाया। देखा गया कि मूल दुर्गंध बहुत कम हो गई और उसका स्थान गोमूत्र की गंध ने ले लिया। इस सफलता को देखते हुए अब गेपिल में प्रतिदिन अपशिष्टों पर चार से पाँच बार गोमूत्र का छिड़काव करवाया जाने लगा है। इससे दुर्गंध की समस्या 80 प्रतिशत तक कम हो गई है।

- अपशिष्ट पदार्थों का प्रसंस्करण करने वाले उद्योग 'गेपिल' में हुआ है यह प्रयोग।
- यह भारी दुर्गंधित औद्योगिक क्षेत्रों में दुर्गंध से छुटकारा दिला सकता है। इससे दुर्गंध से तो छुटकारा मिलेगा ही, गोशालाओं की आमदनी का भी माध्यम बनेगा।

सोने और कच्चे तेल की तरह मूल्यवान होने की राह पर है पानी

एक अमेरिकी टेलीविजन चैनल (WION) की रिपोर्ट

एक अमेरिकी टीवी चैनल विओन के अनुसार पानी आने वाले दिनों में कच्चे तेल और सोने जैसा मँहगा और मूल्यवान पदार्थ बनने जा रहा है। अमेरिकी बाजार में अब आधिकारिक रूप से पानी का व्यापार होने लगा है। कच्चे तेल और सोने की तरह पानी को भी अब भविष्य के बाजार में शामिल कर लिया गया है।

विऑन चैनल पर प्रसारित एक रिपोर्ट में टीवी एंकर ने इसका कारण जलवायु परिवर्तन को बताया। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के कारण पूरी दुनिया में पानी तेजी से घट रहा है। अब पानी व्यापार की वस्तु बनती जा रही है। उसकी कीमत लगातार बढ़ रही है। कैलिफोर्निया में पिछले एक वर्ष में पानी की कीमत दुगनी हो गई है। इस बेतहाशा वृद्धि को ध्यान में रखते हुए अमेरिकी कम्पनी सीएमई ग्रुप ने इसे भविष्य के बाजार में शामिल कर लिया है। बढ़ती जा रही अकाल की संख्या और जंगलों की आग ने पानी के संकट की आशंका को सारी दुनिया में गहराया है।

> सन् 2025 तक विश्व के दो तिहाई हिस्सों में पानी का भारी संकट उपस्थित होने जा रहा है, जो बेहद चिन्ताजनक है। कई विशेषज्ञों का तो यहाँ तक अनुमान है कि भविष्य के युद्ध पानी को लेकर हुआ करेंगे। भारत में भी कई नगरों-क्षेत्रों का पानी पूरी तरह से सूख जाने का अनुमान लगाया जा रहा है।

भविष्य के बाजार का अर्थ है किसी वस्तु को भविष्य में प्राप्त करने के लिए उसे आज ही खरीद लेना, उसका मोल-भाव आज ही तय कर लेना। इसमें उस समय की स्थिति का अनुमान लगाते हुए भाव तय किया जाता है। अभी तक कच्चे तेल और सोने को इस तरह के व्यापार में शामिल किया जाता रहा है। अब पानी को भी इसमें शामिल किया जाने लगा है।

अमेरिकन कम्पनी ने कैलिफोर्निया स्पॉट वॉटर का सौदा किया है। कैलिफोर्निया में 486.53 डॉलर प्रति एकड़ फुट के दाम लगाए जा रहे हैं। कैलिफोर्निया में यह बाजार 1.1 बिलियन डॉलर (लगभग 8000 करोड़ रुपये) का है। इस तरह अब पानी व्यापार की वस्तु बन गया है।

टीवी एंकर ने पानी के संकट पर पूरे विश्व को चेताते हुए कहा कि पानी इंसान की मौलिक आवश्यकता है। लेकिन अनुमान लगाया जा रहा है कि सन् 2025 तक विश्व के दो तिहाई हिस्सों में पानी का भारी संकट उपस्थित होने जा रहा है, जो बेहद चिन्ताजनक है। जहाँ यह संकट पैदा हो गया है वहाँ तो चिन्ता की बात है ही, लेकिन जहाँ अभी पानी सरलता से उपलब्ध है उन्हें भी चेत जाना चाहिए।

नियमित साधना अनुष्ठान करते हैं नैनी कारागार के बंदीगण

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार प्रयागराज की ज्ञानयज्ञ शाखा जनजीवन में उत्कृष्टता के समावेश के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहती है। उनके द्वारा केन्द्रीय कारागार नैनी, प्रयागराज में बंदियों के उत्थान के लिए किए जा रहे प्रयास भी बहुत सफल रहे हैं। बंदियों में गायत्री उपासना, साधना का भरपूर उत्साह है। इसी का प्रभाव है कि वहाँ पिछले 3 वर्षों से बंदीगण निरन्तर नवरात्र साधना अनुष्ठान कर रहे हैं। महिला बंदी भी इनमें शामिल होती हैं।

ज्ञानयज्ञ शाखा प्रभारी श्री देवव्रत साहा राय ने बताया कि हर नवरात्र में 70 से लेकर 100 तक बन्दीगण जप एवं मंत्रलेखन अनुष्ठान करते हैं। इसका स्पष्ट प्रभाव बंदियों के विचार एवं व्यवहार में देखा जा सकता है, जिसकी प्रशंसा कारा प्रबन्धक एवं अधिकारीगण भी करते हैं। बंदियों के उत्थान के इस अभियान में सर्वश्री अवधेश सिंह, सरयू प्रसाद विश्वकर्मा, जगदीश जोशी प्रमुख सहयोगी रहे हैं।

शक्तिपीठ पर स्वास्थ्य शिविर

नियमित रूप से भी चल रही हैं स्वास्थ्य सेवाएँ

राँची। झारखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ सेक्टर 2, धुर्वा पर 25 नवम्बर को स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। सुप्रसिद्ध होमियोपैथिक चिकित्सक डॉ. राजीव कुमार की टीम के साथ डॉ. मोना एवं डॉ. रवि कुमार ने अपनी महती सेवाएँ प्रदान कीं। चार घण्टे चले इस शिविर का लगभग 50 लोगों ने लाभ लिया।

शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री जटाशंकर झा के अनुसार इस शक्तिपीठ सेक्टर-2, धुर्वा, राँची पर नियमित रूप से स्वास्थ्य सेवाएँ दी जाती हैं। प्रत्येक शनिवार को आयुर्वेदिक चिकित्सक डॉ. रवि एवं रविवार को डॉ. दीपक सेवाएँ देते हैं तथा प्रथम व अन्तिम बुधवार को डॉ. राजीव की टीम होमियोपैथिक चिकित्सा प्रदान करती है।

शक्तिपीठ पर चल रहा चिकित्सा शिविर

सालारिया गो अभयारण्य में गायत्री परिवार बनाएगा गो मठ

पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा रहा है गो अभयारण्य

सुसनेर, उज्जैन। मध्य प्रदेश

6 दिसम्बर को गो-अभयारण्य एं अनुसंधान केन्द्र सालरिया में जिला कलेक्टर श्री अवधेश शर्मा की अध्यक्षता में एक महत्त्वपूर्ण बैठक हुई। इस अवसर पर अभयारण्य को पर्यटन केन्द्र केरूप में विकसित करने पर भी चर्चा हुई और कलेक्टर महोदय ने इस गो-अभयारण्य को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि अखिल विश्व गायत्री परिवार, आजीविका मिशन, पशुपालन तथा आयुष विभाग मिलकर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

इस बैठक में गायत्री परिवार की ओर से प्रज्ञा कुंज आमला के श्री मणिशंकर चौधरी, महेश विश्वकर्मा, रामस्वरूप रावटिया उपस्थित रहे। उन्होंने अपनी गतिविधियों एवं संभावित कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए इस अभयारण्य को गो मठ बनाने का आश्वासन दिया। गायत्री परिवार के प्रवक्ता ने यहाँ गोबर एवं गोमूत्र से स्वास्थ्यवर्धक औषधियाँ, गो-काष्ठ, गोबर की खाद बनाने की योजनाएँ बताईं। अन्य रचनात्मक गतिविधियों में ग्रामीण बच्चों को संस्कारवान बनाने का संकल्प भी दोहराया। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक, जिला पंचायत सीईओ सहित अनेक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया।

सालरिया में जिला कलेक्टर श्री अवधेश शर्मा से चर्चा करते गायत्री परिवार के परिजन

खुशमिजाजी तन्दुरुस्ती है, गमगीनी बीमारी।

विचार क्रान्ति अभियान

अहमदाबाद के एक पार्क का नामकरण हुआ 'गायत्री परिवार उद्यान'

सघन वृक्षारोपण के नैष्ठिक प्रयासों का प्रभाव उप महापौर ने किया शिलापट्ट का अनावरण

अहमदाबाद। गुजरात

पर्यावरण संरक्षण और वृक्षारोपण के लिए गायत्री परिवार के सैकड़ों भाई-बहिनों द्वारा वर्षों से की जा रही सेवाओं को ध्यान में रखते हुए नरोड़ा के एक उद्यान का नाम 'गायत्री परिवार उद्यान' कर दिया है। नगर पालिका के कई अधिकारियों और परिजनों की उपस्थिति में उप महापौरश्री ने उद्यान के द्वार पर इस आशय के शिलापट्ट का अनावरण किया।

नरोड़ा क्षेत्र में गायत्री परिवार द्वारा सघन वृक्षारोपण किया जा रहा है। जीआईडीसी की ओर से गायत्री परिवार को पाँच प्लॉटों पर वृक्षारोपण की जवाबदारी मिली है। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने कड़ी मेहनत के साथ इन में त्रिवेणियाँ लगाईं। वहाँ अब तक 2500 वृक्ष लगाए और 7 वर्ष तक के बड़े किए जा चुके हैं। विगत कोरोना काल में भी गायत्री परिवार ने इन प्लॉटों पर 700 वृक्षों की पौध रोपी। गायत्री परिवार के परिजन वहाँ हर 10 दिन में लगाए गए वृक्षों की देखभाल करने जाते हैं।

श्री सतीश भाई पटेल नरोडा में वृक्षारोपण कर रही गायत्री परिवार की टीम के वरिष्ठ सदस्य हैं। उनके द्वारा पर्यावरण एवं जल संरक्षण के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें केन्द्र सरकार की ओर से सम्मान पत्र एवं प्रोत्साहन राशि भी प्राप्त हुए हैं।

युगऋषि के प्राणवान सूत्रों को जन-जन तक पहुँचाने में जुटी राँची की तरुणाई

विद्यालयों में सद्वाक्य लेखन अभियान

राँची। झारखण्ड

ज्ञापांक 14/व./1-41/2019/620, राँची दिनांक 22/05/2019 के तहत झारखण्ड सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत सभी जिलों के सभी प्राथमिक, मध्य एवं उच्च विद्यालयों में सद्वाक्य लेखन कराने हेतु अनुमति दी गई है। तद्नुसार गायत्री शक्तिपीठ राँची ने डोरंडा बालिका उ. विद्यालय, एस. एस. इण्डटर विद्यालय सहित कई विद्यालयों में परम पूज्य गुरुदेव एवं महापुरुषों के सद्वाक्य लिखने का कार्य आरम्भ कर दिया है। हाल ही में उनके द्वारा विद्यालयों में और क्रिकेट स्टेडियम, हरमू मुक्तिधाम

आदि में 100 से ज्यादा सद्वाक्य लिखवाये गए हैं।

राज्य सरकार की अनुमति

झारखण्ड सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा पारित आदेश की प्रति प्राप्त करने के लिए मोबाइल 9835748049 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

मंदिर-मंदिर बैनर/स्टिकर

मंदिरों में बैनर/स्टिकर लगा रही नवयुवकों की टोली

राँची। झारखण्ड

गायत्री शक्तिपीठ राँची का सद्वाक्य के बोर्ड तथा बड़े आकार के स्टिकर लगाकर विचार क्रान्ति का अभियान पूरे जोरों पर है। ये बोर्ड एवं स्टिकर नगर के मंदिरों, दूर-दूर तक के रेलवे स्टेशनों एवं सार्वजनिक स्थानों पर सैकड़ों की संख्या में लगाए जा चुके हैं। युवाओं की एक सशक्त टोली अहर्निश इस अभियान में जुटी है।

श्री दीपक दयाल प्रसाद के अनुसार राँची शहर के 16 सुप्रसिद्ध मंदिरों में अब तक 45 सद्वाक्य के फ्लैक्स बोर्ड तथा 30 स्टिकर लगाए गये। सार्वजनिक स्थानों को मिलाकर कुल 258 बोर्ड/स्टिकर लगाये जा चुके हैं। इस अभियान में सर्वश्री मुकेश कुमार मिश्रा, दुर्गा प्रसाद साहू, राजपति शर्मा, विनय कुमार, श्रीमती संजू सरस्वती, श्रीमती रोमा सिंह का प्रमुख सहयोग रहा है।

युगऋषि के क्रान्तिकारी विचारों से लाभान्वित हो रही है भावी पीढ़ी

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर द्वारा 337वाँ वाङ्मय साहित्य सेट स्थापित

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ ने श्री गाँधी इण्टर कालेज स्टेशन रोड, उरई के केन्द्रीय पुस्तकालय में युगऋषि के वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापित हुई। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री भगवत पटेल, जिला विद्यालय निरीक्षक उरई ने कहा कि पूर्वजों की स्मृति में किया ज्ञानदान उनके प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि है। वाङ्मय स्थापना अभियान के संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने युगऋषि के विचारों का प्रभाव और वर्तमान समाज को उसकी आवश्यकता समझायी।

श्री गाँधी इ. कॉलेज के विद्यार्थी अखण्ड ज्योति पत्रिका के साथ

> पूर्वजों की स्मृति में किया गया ज्ञानदान एक सच्ची श्रद्धांजलि है।
> – श्री भगवत पटेल, जिला विद्यालय निरीक्षक, उरई

यह साहित्य श्री मनोज कुमार निरंजन एवं उनकी धर्मपत्नी ने अपने पूर्वजों की स्मृति में विद्यालय को भेंट किया है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए किए गए इस दान पर हम गौरवान्वित हैं।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री अंतराम साहू, पवनी। छत्तीसगढ़

कई वर्षों से प्रज्ञापीठ पवनी के व्यवस्थापक के रूप में अपना अधिकांश समय अर्पित करने वाले श्री अंतराम साहू (गुरुजी) का 84 वर्ष की उम्र में दिनांक 6 दिसम्बर को देहावसान हो गया। सन् 79 में मिशन से जुड़े, प्रधान पाठक के पद से सेवा निवृत्ति के बाद सन् 2000 से अधिकांश समय मिशन को दिया। प्रज्ञापीठ की स्थापना, श्मशान घाट में वृक्षारोपण जैसे कार्यों में अविस्मरणीय योगदान रहा। इस उम्र में भी वे लगभग 200 पत्रिकाएँ वितरित करते थे।

श्री जगदीश रस्तकुदरा, कैमूर भभुआ। बिहार

मगध क्षेत्र के प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री जगदीश रस्तोगी दिनांक 22 नवम्बर 2020 को नश्वर देह त्यागकर गुरुचेतना में विलीन हो गए। उनका निधन संपूर्ण सासाराम उपजोन के लिए एक अपूर्णीय क्षति है। उपजोन के अन्तर्गत आने वाले जिलों के अनेक वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने कुदरा पहुँचकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धाञ्जलि दी और परिवारी जनों को सांत्वना प्रदान की।

श्रीमती कविता रिमाचंद चुटे, भण्डारा। महाराष्ट्र

पिछले 20 वर्षों से मिशन की सेवा में अहर्निश समर्पित जवाहर नगर, भण्डारा निवासी श्रीमती कविता चुटे का 4 दिसम्बर 2020 को 59 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उन्होंने एक आदर्श शिक्षिका, आदर्श नारी और प्राणवान कार्यकर्त्ता के रूप में सभी पर गहरी छाप छोड़ी है।

कुम्भ महापर्व उपलक्ष्य में गायत्री तपोभूमि मथुरा की ज्ञान विस्तार योजना

कुम्भ महापर्व हरिद्वार-ज्ञान प्रसाद आपके द्वार

कुंभ महापर्व हरिद्वार एवं वृंदावन दिनांक-14 जनवरी से 12 अप्रैल 2021 तक रहेगा।

कुंभ महापर्व में स्नान को मोक्ष देने वाला, अर्थात् सांसारिक बंधनों से मुक्ति माना गया है। यह उपलब्धि ऋषियों से प्राप्त ज्ञानामृत का पान करने से ही संभव है; यही कुंभ का प्रयोजन है।

इन दिनों कोरोना संक्रमण की विभीषिका के कारण कुंभ में भीड़ करना विवेकसम्मत नहीं है। अतः गायत्री तपोभूमि, मथुरा द्वारा प्रस्तुत की जा रही कुम्भ ज्ञानयज्ञ योजना का लाभ लीजिये।

इस योजना के अन्तर्गत युगऋषि की चमत्कारी लेखनी से अवतरित साहित्य-सागर से चुने हुए मोतियों के रूप में कुछ पुस्तकों का एक सेट, जिसका मूल्य डाकखरच सहित 250/-रुपये रखा गया है, तैयार किया गया है। न्यूनतम 10 सेट की राशि 2500 रुपये, अधिक आपकी इच्छानुसार अपने घर बैठे उन स्वजनों, मित्रों, रिश्तेदारों या परिचितों तक पहुँचाइये। उन सभी का पूरा नाम, पता, पिन कोड, मोबाइल नंबर और सेट का मूल्य गायत्री तपोभूमि मथुरा को भेज दें तो यह सेट आपको भेज दिए जायेंगे।

धनराशि युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट के खाता संख्या 144102000002021, IFS Code : IOBA0001441 में इंडियन ओवरसीज बैंक, शाखा-युग निर्माण तपोभूमि, मथुरा में जमा कर दें और पे-इन-स्लिप की फोटो गायत्री तपोभूमि, मथुरा की E-Mail ID: yugnirman@yugnirmanyojna.org पर भेज दें। किसी विशेष जानकारी के लिए 9412171035 अथवा 7983984397 पर संपर्क कर सकते हैं।

कुम्भ महापर्व सेट की पुस्तकों की सूची-

(1) ऋषि चिन्तन के सान्निध्य में-250 रु. (2) हारिये न हिम्मत-5 रु., (3) मैं क्या हूँ?-12 रु. (4) गायत्री मंत्र एक महाविज्ञान-8 रु. (5) दुनिया बदलेगी इन विचारों से-30 रु. (6) विभिन्न विषयों की 25 पॉकेट बुक्स-125 रु.।

उपरोक्त कुल 430 रुपये का साहित्य डाकखरच सहित मात्र 250 रुपये में भेजा जाएगा।

प्रेरक परम्परा, प्रगतिशील विचार

शिविर के सहयोगियों एवं रक्तदाताओं का सम्मान करते परिवारी जन

पगड़ी के कार्यक्रम में 41 लोगों ने रक्तदान किया

श्री रामलाल राठौर, जोबट, अलीराजपुर। म.प्र.

गायत्री शक्तिपीठ जोबट के पूर्व ट्रस्टी एवं राठौर समाज के वरिष्ठ समाजसेवी, प्रखर साधक श्री रामलालजी आत्माराम राठौर का 84 वर्ष की उम्र में 29 नवम्बर 2020 को अपनी आराध्य सत्ता में लीन हो गये।

स्व. श्री रामलाल जी ने मथुरा में प.पू. गुरुदेव के सान्निध्य में प्राण प्रत्यावर्तन सत्र में भाग लिया। गायत्री तपोभूमि एवं शांतिकुंज के अपने लगभग 80 प्रवासों में नए-नए परिजनों को साथ लाकर उन्हें मिशन से जोड़ते रहे। अश्वमेध यज्ञों में भी एक-एक माह का समयदान किया। वे एक अच्छे दानवीर थे, जिन्होंने श्रेष्ठ कार्यों में सदा मुक्तहस्त सहयोग दिया।

श्री रामलाल राठौर जी के परिवार ने अपने मिशन की प्रगतिशील विचारधारा अपनाते हुए एक प्रेरक पहल की है। उन्होंने पगड़ी के कार्यक्रम में रक्तदान शिविर का आयोजन किया। परिवार एवं समाज के 29 पुरुष एवं 12 महिलाओं ने रक्तदान कर एक सार्थक श्रद्धांजलि दी। श्री रामलाल जी के सुपुत्र सर्वश्री जगदीश चंद, देवचंद, प्रमोद एवं ओमप्रकाश ने सभी रक्तदाताओं तथा सहयोगी-जिला अस्पताल ब्लड बैंक, जोबट सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के कर्मियों को देवस्थापना चित्र प्रदान कर उनका आभार व्यक्त किया।

चंदन स्वयं घिसकर सुगन्ध देता है। भले मनुष्यों का यही काम है।

पर्वों के प्रकाश में हो रहा युग चेतना का विस्तार

गुरुनानक जयन्ती एवं देव दिवाली पर हुए यज्ञादि कार्यक्रम

मानव में देवत्व का जागरण सेवा और सद्भाव के सहारे ही संभव है

देवास। मध्य प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार शाखा देवास द्वारा गुरु नानक देव जी के 551वें प्रकाश पर्व पर भव्य दीपयज्ञ का आयोजन किया। परिजनों ने अपने हाथों में दीपक जलाकर उनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण करने का संकल्प लिया। शक्तिपीठ की देव कन्याओं ने शानदार गीत प्रस्तुत किए। श्री प्रमोद निहाले ने गुरुनानक देव जी के जीवनादर्शों का उल्लेख करते हुए कहा कि सेवा और सद्भाव ही व्यक्तित्व में महानता का संचार करते हैं।

वैज्ञानिक अध्यात्मवाद से प्रभावित हुए युवा

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी दिनांक 29 नवंबर को कैवल्यधाम कॉलोनी, दुर्गाकुण्ड स्थित पार्क में विश्व कल्याण की भावना से एकादश कुंडिय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ गायत्री शक्तिपीठ नगवां, लंका की युवा प्रकोष्ठ की टोली ने किया। माननीय नीलकंठ तिवारी, धर्मार्थ कार्य एवं पर्यटन राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार एवं दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री माननीय दयाशंकर मिश्रा, 'दयालु गुरु' सहित अनेक गणमान्यों ने इस यज्ञ में भाग लिया।

यज्ञ में भाग ले रहे स्थानीय युवक गायत्री परिवार द्वारा विवेकपूर्ण एवं वैज्ञानिक आधार पर की गई यज्ञ की व्याख्याओं एवं वर्तमान समय के साथ उनकी संगति से बहुत प्रभावित हुए। परिणाम स्वरूप यज्ञोपरांत उत्साही नवयुवकों की एक बैठक हुई। कैवल्यधाम कॉलोनी में एक नवीन युवा मंडल गठन की रूपरेखा हुई।

गुरुद्वारे में भी दीपाञ्जलि कार्यक्रम हुआ

उज्जैन, मध्य प्रदेश

सिक्ख धर्म के संस्थापक श्री गुरूनानक देव जी के 551वें प्रकाशोत्सव पर उज्जैन शाखा ने बड़े दिव्य वातावरण में दीपाञ्जलि कार्यक्रम आयोजित किया, घर-घर दीप जलाए गए। ज्ञानखेड़ा क्षेत्र के दशमेश गुरुद्वारा में भी शान्तिकुञ्ज से प्रसारित दीपयज्ञ के साथ दीपाञ्जलि का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। परस्पर सद्भाव बढ़ाने के प्रयासों से सिक्ख महानुभव गद्गद थे।

वाराणसी के एक पार्क में हुआ एकादश कुण्डीय यज्ञ

मेला ककोड़ा तट पर गायत्री यज्ञ करते परिजन

उज्जैन के दशमेश गुरुद्वारा में आयोजित दीपाञ्जलि कार्यक्रम

गंगातट पर गायत्री यज्ञ

श्रद्धालु एवं साधु-संतों ने गंगा स्वच्छता के संकल्प लिए

बदायूँ। उत्तर प्रदेश

कार्तिक पूर्णिमा-देव दिवाली के पावन अवसर पर रूहेलखंड के सुप्रसिद्ध मिनी कुंभ मेला ककोड़ा के गंगा तट पर पर्यावरण संरक्षण और सूक्ष्म जगत के परिशोधन हेतु गायत्री महायज्ञ हुआ।

गायत्री परिवार के संजीव कुमार शर्मा ने श्रद्धालुओं को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हम सत्य सिद्ध करने के लिए जिस गंगा की सौगंध लेते हैं, वह जीवनदायिनी माता को हमने स्वार्थ और अंधे विकास की खातिर मरणासन्न स्थिति में ला दिया है। उसका जल पीने और स्नान करने योग्य भी नहीं रहा। श्री रघुनाथ सिंह, प्रधानाध्यापक वीरेंद्र कुमार एवं अमन मयंक शर्मा ने भी माँ गंगा की वर्तमान दुर्दशा का मार्मिक चित्रण करते हुए करने और न करने योग्य कार्यों की चर्चा की।

इस यज्ञ में गायत्री परिवार की प्रार्थना से प्रभावित होकर श्रद्धालुओं और साधु-संतों ने माँ भागीरथी को स्वच्छ स्वच्छ रखने एवं स्वच्छ बनाने का संकल्प लिया।

साधना, संस्कार और लोकमंगल की गतिविधियाँ

उन्नाव। उत्तर प्रदेश

30 नवम्बर को देव दिवाली एवं श्री गुरूनानक देव जयंती मनाते हुए शक्तिपीठ पर कई लोकमंगल के कार्यक्रम हुए। चौबीस हजार गायत्री मंत्र लेखन अनुष्ठान करने वाले तीन साधकों ने शक्तिपीठ पर गायत्री यज्ञ के साथ पूर्णाहुति की। पं. चंद्रकिशोर द्विवेदी ने यज्ञोपवीत एवं शिखा को भारतीय संस्कृति की पहचान बताते हुए चि. शैलेन्द्र और चि. प्रद्युम्न का बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कराया।

श्री सिद्धनाथ श्रीवास्तव ने यज्ञ के शारीरिक-मानसिक लाभों की चर्चा की। सभी कार्यक्रम कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए सम्पन्न हुए। इस अवसर पर कोरोना से बचाव के उपायों का कड़ाई के साथ पालन करने की प्रेरणा भी दी गई। कार्यक्रम के अन्त में जरूरतमंदों में मास्क वितरण का कार्यक्रम रखा गया था।

पवित्र पर्व पर जनहित की गतिविधियाँ

राँची। झारखण्ड

कार्तिक पूर्णिमा सनातन संस्कृति में अत्यंत पवित्र दिन है। इस दिन आत्मशुद्धि के लिए गंगा स्नान, व्रत, उपवास, पूजा-पाठ का विधान है। इस दिन संत श्रद्धालु लोकहित के लिए दान, पुण्य, सेवा कर आत्मसंतोष भी प्राप्त करते हैं।

गायत्री परिवार की राँची शाखा ने कार्तिक पूर्णिमा के पावन दिन 24 घण्टे का अखण्ड जप अनुष्ठान किया। इसकी पूर्णाहुति गायत्री यज्ञ से हुई। दलादली बागीचा टोली रातु कल्याण पीठ के श्री नारायण गौड़ ने इस अवसर पर कार्तिक पूर्णिमा का महत्त्व बताया। इसके साथ लोकमंगल के कई कार्यक्रम भी हुए।

- राँची शहर के प्रसिद्ध पहाड़ी मंदिर परिसर में सद्वाक्यों के बोर्ड और स्टिकर लगाए गए।
- श्री अभिषेक कुमार के जन्मदिन के उपलक्ष्य में चटकपुर, रातू में तालाब के किनारे वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित कर 6 पौधे लगाए गए।

साधना अभियान का शुभारम्भ

कुम्भराज, गुना। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ कुम्भराज पर 13 दिसम्बर 2020 से 40 दिवसीय साधना का अभिनव क्रम आरम्भ करने का संकल्प लिया है। इसके अन्तर्गत 25 परिजन गायत्री मंत्र जप एवं 25 भाई-बहिन प्रतिदिन 24 बार गायत्री चालीसा पाठ करेंगे।

कुम्भराज में यज्ञ के साथ साधना संकल्प करते साधक

न्यायविदों द्वारा चलाया जा रहा है साप्ताहिक जन-जागरूकता अभियान

वेबिनार को संबोधित करते माननीय डॉ. वेदप्रकाश मिश्रा एवं न्यायमूर्ति ज्ञान सुधा मिश्रा (दायें)

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी

इन दिनों गायत्री परिवार से जुड़े न्यायविदों ने सामाजिक जनजागरूकता के लिए **'विचार क्रांति अधिवक्ता अभियान' चला रखा है।** उनके द्वारा प्रत्येक शनिवार एवं क्रांतिकारियों के जन्मदिवस/प्रयाण दिवस पर विभिन्न लोकोपयोगी विषयों पर वेबिनार आयोजित होती हैं। न्यायाधीश/विधिवेत्ता, अधिवक्ता, विद्यार्थी एवं समाजसेवी शामिल होते हैं।

5 दिसंबर 2020-महर्षि अरविन्द के महाप्रयाण दिवस एवं भारत रत्न डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के परिनिर्वाण दिवस की पूर्व संध्या पर 'राष्ट्र के विकास में नागरिकों के कर्त्तव्य एवं दायित्व' विषय पर वेबिनार हुई। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी प्रमुख मार्गदर्शक थे।

माननीय डॉ. वेद प्रकाश मिश्रा, प्रतिकुलपति दत्ता मेघे आयुर्विज्ञान संस्थान, नागपुर ने कहा कि आज देश में जंगल में आग लगने जैसी स्थिति है, जिसे बुझाने की जिम्मेदारी हम सभी नागरिको की है।

न्यायमूर्ति ज्ञान सुधा मिश्रा, भूतपूर्व न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली ने कहा कि अधिकारों की रक्षा सरकार सरकर की जिम्मेदारी है, किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए देश का विकास प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। राष्ट्र के निर्माण में हम अपनी आत्मा को हाजिर नाजिर मानकर यदि अपनी पूर्ण क्षमता से योगदान करें, भागीदारी करें तब देश का विकास अवश्य होगा।

कार्यक्रम की शुरूआत गायत्री मंत्र एवं वक्ताओं के संछिप्त परिचय के साथ हुई। डॉक्टर विनय हजारे ने डॉ. वेद प्रकाश शर्मा का परिचय दिया। श्रीमती प्रियंका सिंह अधिवक्ता ने न्यायमूर्ति ज्ञान सुधा मिश्रा का परिचय कराया। श्री महेन्द्र सिंह अधिवक्ता ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। डॉ. पुष्पा हजारे ने शांतिपाठ किया। श्री जितेन्द्र सिंह अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट ने वेबिनार/कार्यक्रम का सञ्चालन किया।

श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देसंविवि सहित प्रतिष्ठित न्यायाधीशों-अधिवक्ताओं से मिलती है प्रेरणा

अभी तक भारतीय विधि संस्थान, नई दिल्ली, एमिटी विश्वविद्यालय, नॉएडा, डॉ. राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय, लखनऊ, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, आगरा कॉलेज, आगरा, साकेत कॉलेज, अयोध्या, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के विधि संकाय के प्राध्यापक/अध्यापकों/विद्यार्थियों की भागीदारी हुई है है।

वर्ष 2021 की योजनाओं के लिए संगोष्ठी

बरमकेला, रायगढ़। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ बरमकेला ने 11 दिसम्बर को श्री गिरजाशंकर गुप्ता की अध्यक्षता में ब्लॉक स्तरीय गोष्ठी आयोजित कर आगामी वर्ष की योजनाओं पर चर्चा की। श्री राम चरण सिदार ने 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' योजना को सभी को विस्तार से समझाया। इस अवसर पर प्रज्ञा, महिला, युवा-सभी मण्डलों को सशक्त करते हुए भावी कार्यक्रमों के बेहतर क्रियान्वयन पर जोर दिया, आवश्यक सुझाव भी दिये। जिला समन्वयक श्री क्षीरसागर पटेल ने 'गायत्री परिवार की आचार संहिता' पर एक आलेख प्रस्तुत किया गया। इस पर अमल करते हुए संगठन को मज़बूत करने की प्रेरणा दी गई।

- बरमकेला शाखा ने 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' योजना के अन्तर्गत प्रत्येक ब्लॉक को 1000 गंगाजल कलश स्थापित करने का लक्ष्य दिया है।
- बरमकेला ब्लॉक को 7 जोन में बाँटा गया, जिसमें प्रत्येक में 13 से 17 पंचायतें आती हैं। प्रत्येक जोन में साप्ताहिक यज्ञ-दीपयज्ञ के कार्यक्रम कराने की रूपरेखा बनाई गई।
- भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के आयोजन पर भी चर्चा हुई।

छः नवचेतना केन्द्रों का गठन हुआ

उमरीखुर्द, पांढुर्ना, छिंदवाड़ा। म. प्रदेश

ग्राम उमरीपुर में संगठन सशक्तीकरण एवं विस्तार के लिए एक विशेष बैठक आयोजित की गई। इसमें 61 गाँवों के बीच 6 नवचेतना केन्द्रों (डुड्डेवानी, सिराठा, लोनादेही, पारडी, उमरी एवं हिवरा में) का गठन किया गया।

यह बैठक 29 नवम्बर को उमरीखुर्द स्थित माँ भगवती गौशाला में आयोजित गायत्री यज्ञ के बाद रखी गई थी। इसमें जिला स्तरीय कार्यकर्त्ता सर्वश्री दिनेश देशमुख, रमेश कोरडे, अरुण पराडकर, नरेन्द्र हिंगवे, विनोद माहोरे आदि उपस्थित रहे।

पानी से शरीर, धर्म से आत्मा, ज्ञान से बुद्धि और सत्य से मन पवित्र होता है।

निर्मल गंगा अभियान के सम्बन्ध में देसंविवि एवं यूसार्क की ई-संगोष्ठी

निर्मल, अविरल गंगा के लिए लोगों के मन और विचारों को भी बदलने की आवश्यकता है। - डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और यूसार्क (उत्तराखण्ड) के साथ निर्मल गंगा अभियान के तहत एक ई-संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इसका आयोजन टी.सी.एम. (तकनीकी, संवाद व प्रबधंन) स्कूल के डीन प्रो. अभय सक्सेना द्वारा किया गया था।

आरम्भ में प्रो. सक्सेना ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में गंगा के स्वरूप, उसकी भौगोलिक विशेषताओं को उससे जुड़ी धार्मिक भावनाओं के परिप्रेक्ष्य में समझाया।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रति कुलपति मुख्य वक्ता थे। उन्होंने गंगा के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व की हृदयस्पर्शी विवेचना की। उन्होंने कहा कि निर्मल, अविरल गंगा के लिए हमें स्वयं के अंदर भी बदलाव लाना होगा। लोगों के मन और विचारों को भी बदलने की आवश्यकता है। गंगा स्वच्छता के विभिन्न प्रोजेक्ट/शोधकार्यों के साथ प्राचीन तीर्थ परम्परा को पुनः स्थापित करने के लिए भी कार्ययोजना तैयार होनी चाहिए।

श्री आनंद वर्धन, यूसार्क से श्री सुरेश नौटियाल, नैनीताल से डॉ. आशुतोष भट्ट, डॉ. ओमप्रकाश इत्यादि के विचार ध्यानाकर्षक थे। संगोष्ठी में देसंविवि की ओर से कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन, डॉ. शिवनारायण प्रसाद, श्रीराधेश्याम सोनी, डॉ. अरूणेश पाराशर, डॉ. उमाकांत इंदौलिया इत्यादि ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। गंगा के महत्व, उस पर हो रही शोध, शान्तिकुञ्ज का निर्मल गंगा जन अभियान, जैव विविधिता, पौधारोपण, संरक्षण इत्यादि विषयों पर चर्चा हुई। सभी ने एक्शन प्लान बनाने व उसका उचित प्रबंधन करने सम्बन्धी उपायों पर तकनीकी सम्मत व्याख्या की।

देव संस्कृति विवि. की ओर से प्रतिभागीगण, बायें से क्रमशः डॉ. उमाकान्त इन्दौलिया, डॉ. अरुणेश पाराशर, डॉ. अभय सक्सेना, श्री बलदाऊ देवांगन-कुलसचिव, श्री राधेश्याम सोनी एवं श्री भूपेन्द्र मण्डल

बायें से क्रमशः श्री आनन्दवर्धन, डॉ. आशुतोष भट्ट, डॉ. ओमप्रकाश

पीएच.डी. के लिए लिखित प्रवेश परीक्षा सम्पन्न

कुल 46 सीट्स के लिए 107 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, अगले चरण की परीक्षा की तैयारी

9 दिसम्बर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पीएच.डी. के लिए लिखित प्रवेश परीक्षा हुई। कुल 107 विद्यार्थियों ने इस परीक्षा के लिए आवेदन किया है। नेट क्वालिफाई कर चुके विद्यार्थियों को सीधे साक्षात्कार में प्रवेश दिया गया, जबकि शेष 68 विद्यार्थियों की लिखित परीक्षा हुई।

लिखित परीक्षा के संबंध में जानकारी देते हुए पीएच.डी. समन्वयक डॉ. स्मिता वशिष्ठ ने बताया कि विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच तथा शोधकार्यों में संभावित समस्याओ के निराकरण की उनकी क्षमताओं को परखने के लिए यह परीक्षा आयोजित की गई थी। इस सम्बन्ध में नई शिक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए देसंविवि में कार्यक्रम तैयार किए गए हैं। समाचार लिखे जाने तक परीक्षा में सफल एवं नेट क्वालिफाई करने वाले विद्यार्थियों का साक्षात्कार शेष था, जिसके लिए 18 से 26 दिसम्बर के बीच की तिथियाँ निर्धारित थीं।

कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए पीएच.डी. की प्रवेश परीक्षा दे रहे विद्यार्थी

पूरे जोश और उल्लास से भरा है शान्तिकुञ्ज

कोरोना काल ने शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं को नए जोश और उमंग से भर देने का अवसर प्रदान किया है। इन दिनों अतिरिक्त साधना के साथ परस्पर आत्मीयता विस्तार के अनेक कार्यक्रम यहाँ चल रहे हैं, जिन्होंने न केवल संगठन को सुदृढ़ बनाने, बल्कि कार्यकर्त्ताओं में छिपी मौलिकताओं को उकेरने का अवसर प्रदान किया है। युवाशक्ति आगे बढ़कर दायित्व सँभाल रही है।

आपदा अवसर में बदली

शान्तिकुञ्ज में प्रायः हर रविवार को अथवा पर्वों पर, विशिष्ट अतिथियों के आगमन पर सामूहिक स्वच्छता श्रमदान होता है। महापुरुषों की जयन्तियों पर हर घर की भागीदारी के साथ गुरुस्मारकों पर दीपयज्ञ होता है। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं शेफाली दीदी भी इनमें कार्यकर्त्ताओं के बीच उपस्थित रहते हैं। दैनिक रात्रि सुरक्षा का अत्यंत आनन्ददायक क्रम चल पड़ा है। व्हॉट्सएप पर बने संगठन के माध्यम से कार्यकर्त्ताओं की लेखन एवं काव्य प्रतिभा में उल्लेखनीय निखार आया है। प्रेरक संदेश वाले वीडियो बनाना, नए गीतों की रिकॉर्डिंग जैसे अनेक कार्यों में प्रायः हर कार्यकर्त्ता अपनी प्रतिभा का सुनियोजन करता दिखाई दे रहा है।

सोमवती अमावस्या के दिन गुरुस्मारकों पर दीपयज्ञ एवं रविवार को सामूहिक स्वच्छता अभियान में कार्यकर्त्ताओं की भागीदारी

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान का

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती एवं कुम्भ विशेषांक

शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष का शुभारंभ कुम्भ मेला, हरिद्वार-2021 के परिप्रेक्ष्य में **'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार'** अभियान के साथ हो रहा है। इसके अन्तर्गत देश के न्यूनतम दस लाख घरों में शान्तिकुञ्ज एवं कुम्भ के प्रतीकों की स्थापना की जानी है (देखें पृष्ठ 2)। इन स्थापनाओं में कुम्भ की और शान्तिकुञ्ज की महत्ता से जन-जन को अवगत कराने के लिए एक पुस्तिका भी शान्तिकुञ्ज से भेजी जा रही है।

यह पुस्तिका शीघ्र ही प्रज्ञा अभियान के विशेषांक के रूप में भी प्रकाशित होगी। इसमें शांतिकुञ्ज की पिछले 50 वर्षों की प्रमुख उपलब्धियाँ, परम पूज्य गुरुदेव के भविष्य कथन जो सच हुए जैसे कई महत्त्वपूर्ण विषयों को भी शामिल किया जाएगा।

समर्थ महानुभावों एवं श्रद्धालुओं से अनुरोध

ऐसा ही विशेषांक कुम्भ में ज्ञानयज्ञ के आकांक्षी परिजनों के सौजन्य से प्रकाशित किया गया था, जिसकी दो लाख प्रतियाँ निःशुल्क बाँटी गई थीं। पुस्तक और प्रज्ञा अभियान के विशेषांक सहित यह संख्या लगभग 15 लाख से अधिक होगी। घर-घर तक युग चेतना का आलोक पहुँचाने में प्रभावशाली भूमिका निभाने वाले इस कार्य में भागीदार बनकर कुम्भ का पुण्य एवं ऋषियुग्म की सूक्ष्म चेतना के शुभाशीष प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए वे अपनी सहयोग राशि शान्तिकुञ्ज को भिजवा सकते हैं।

यह विशेषांक 12 पृष्ठ का होगा। प्रज्ञा अभियान के विशेषांक और पुस्तक का मूल्य ₹ 5/- प्रति अंक है। 10,000 से अधिक अंक की सहयोग राशि भेजने वाले सौजन्यकर्त्ताओं का नाम प्रज्ञा अभियान के विशेषांक में प्रकाशित किया जाएगा।

सहयोगकर्त्ता अपनी सहयोग राशि के अनुपात में अतिरिक्त प्रज्ञा अभियान स्वयं मँगाकर अपने क्षेत्र में वितरित कर सकते हैं। 10,000 अंकों से कम की भी धनराशि जमा कराकर (₹ 5/- प्रति अंक) अतिरिक्त पाक्षिक मँगवाये और अपने क्षेत्र में बँटवाये जा सकते हैं, किन्तु उनका नाम पाक्षिक में प्रकाशित नहीं हो पाएगा। ऐसे लोगों को न्यूनतम 50 प्रज्ञा अभियान मँगाने होंगे।

नोट : अपना ऑर्डर और सहयोग राशि 10 जनवरी 2021 तक अवश्य प्रेषित कर दें। एक बार छप जाने के बाद दोबारा प्रज्ञा अभियान छपवाना संभव नहीं होगा।

इस मद में धनराशि निम्न खातों में जमा कराई जा सकती है।

खाते का नाम : **श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी)**

पंजाब नेशनल बैंक : 4694002100000572 (16 अंक)
IFSC Code : PUNB0469400

एक्सिस बैंक : 914020031711542 (15 अंक)
IFSC Code : UTIB0000156

एचडीएफसी बैंक : 09431450000037 (14 अंक)
IFSC Code : HDFC0000943

- बैंक खातों में धनराशि जमा कराने के बाद ट्रांसफर का प्रूफ, अपना पूरा नाम, पता (पिन कोड सहित) तथा धनराशि का प्रयोजन ई-मेलः (pragyaabhiyan@awgp.in) से अवश्य भेज दें।
- धनराशि यथासंभव NEFT या RTGS करने का ही प्रयास करें।

नोट : • प्रज्ञा अभियान के नए ग्राहक बनने या सदस्यता नवीनीकरण के लिए भी धनराशि उपरोक्त खाते में ही जमा कराई जा सकती है। वार्षिक चंदा ₹ 60/-प्रति अंक
• न्यूनतम 25 प्रज्ञा अभियान रजिस्टर्ड डाक से भेजे जाते हैं, जिससे उनके पहुँचने की सुनिश्चितता रहे।

'अनाहत' के लिए अपनी रचनाएँ भेजिये

देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा एक ऑनलाइन पत्रिका 'अनाहत' का प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें मौलिक कवितायें, प्रेरणाप्रद कहानियाँ, जिज्ञासा, समसामयिक चिंतन, जीवनदर्शन, स्वास्थ्य, यात्रा वृत्तांत, युवामन, पुस्तक समीक्षा-पूज्यवर के सत्साहित्य से, पर्यावरण, मनोविज्ञान, शिक्षा, सूचना तकनीकी, धर्म एवं अध्यात्म जैसे विषयों पर रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं।

सुधी पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका से अधिक से अधिक लोगों को अवगत कराते हुए विचार क्रान्ति अभियान में अपना भावभरा योगदान दें। उत्साही, नैष्ठिक और ऊजार्वान लेखकों से इस पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ भेजने का अनुरोध है।

अनाहत के अब तक दो अंक प्रकाशित हो चुके हैं। यह पत्रिका www.dsvv.ac.in/category/anahat/ पर उपलब्ध है। पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ ई-मेलः anahat@dsvv.ac.in/provc@dsvv.ac.in से भेजें।

भारतीय संस्कृति के विश्वव्यापी विस्तार में बहुत बड़ा योगदान दे रहा है देव संस्कृति विश्वविद्यालय

माननीय श्री जगत प्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा.

बाँये-कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी माननीय श्री नड्डा जी को देव संस्कृति विश्वविद्यालय का स्मृति चिह्न भेंट करते हुए दायें- 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' की आरती उतारते श्री नड्डा, श्रीमती नड्डा, डॉ. निशंक, डॉ. चिन्मय जी एवं अन्य गणमान्य

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री जगत प्रकाश नड्डा 4 दिसम्बर 2020 को शान्तिकुञ्ज आए। उन्होंने ऋषियुग्म के पावन स्मारकों पर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के साथ अपनी 120 दिन की देशव्यापी संगठन सशक्तीकरण यात्रा का शुभारंभ किया।

शान्तिकुञ्ज द्वारा उनके सम्मान में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में स्वागत समारोह आयोजित किया गया था। वहाँ उन्होंने एक समर्पित शिष्य के रूप में लोकमंगल के लिए किए जा रहे परम पूज्य गुरुदेव, शान्तिकुञ्ज एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के योगदान का हृदय से स्मरण किया। उन्होंने स्वल्प समय में ही अखण्ड ज्योति, गायत्री मंत्र, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के बारे में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा-

अखण्ड ज्योति

मेरी बुआ (वर्तमान में आयु 102) परम पूज्य गुरुदेव की शिष्या हैं। उनके माध्यम से बचपन में ही मुझे अखण्ड ज्योति पत्रिका को देखने-पढ़ने का अवसर मिला। मैं क्या हूँ? मुझे क्या सोचना चाहिए, क्या करना चाहिए, कैसा जीवन जीना चाहिए? यह सब अखण्ड ज्योति में मैंने पढ़ा, फिर बुआजी के साथ शान्तिकुञ्ज आकर दीक्षा ली।

गायत्री मंत्र

मेरी यात्रा 'मैं' से शुरू हुई, फिर 'हम' पर आई। फिर हम से 'सब' हुआ। अब 'सब में हम है।' यह अनुभव सुदृढ़ हो रहा है। यह गायत्री मंत्र के प्रभाव से आत्मचेतना के जागरण से यह बोध होने लगता है। बीज मंत्र गायत्री के प्रभाव से काम, क्रोध, मोह से लड़ने की दृष्टि और ताकत मिलती है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

यह भारतीय संस्कृति की जड़ों से जुड़ा हुआ विश्वविद्यालय है। यहाँ जीवन की आचार संहिता का पाठ पढ़ाया जाता है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता इसी की है और अवहेलना भी सबसे ज्यादा इसी की हो रही है। गायत्री से आचार संहिता के पालन की शक्ति मिलती है।

यह विवि. भारतीय संस्कृति को विश्व पटल पर पहुँचाने के लिए बहुत अच्छा काम कर रहा है, डॉ. प्रणव पण्ड्या जी और डॉ. चिन्मय जी बहुत मेहनत कर रहे हैं।

मेरा उद्देश्य

मोदी जी ने योग को पूरी दुनिया में स्थापित किया। उनके नेतृत्व में भारतीय संस्कृति पूरी दुनिया में स्थापित हो सकती है। मैं देश को अच्छा बनाने में अच्छा उपकरण बनूँ, यही प्रार्थना लेकर शान्तिकुञ्ज आया हूँ।

कुशल नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं नड्डा जी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति देसंविवि

श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि नड्डा जी अपने गायत्री परिवार के ही सदस्य हैं। उनका स्वागत करते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। वे पूरे देश को कुशल नेतृत्व प्रदान करने का बड़ा काम कर रहे हैं। हमें उम्मीद है कि आपके माध्यम से यह प्रेरणा सब तक पहुँचेगी कि विचार परिवर्तन आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। पूज्य गुरुदेव के विचार और गायत्री परिवार के विभिन्न प्रकल्पों से अधिक से अधिक लोग जुड़ेंगे। भारतीय संस्कृति के उत्थान में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब के साथ श्री जे.पी. नड्डा एवं श्रीमती नड्डा

- देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित स्वागत समारोह में डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति ने समस्त गणमान्यों का स्वागत किया।
- मंचासीन गणमान्यों ने 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' लोगो तथा 'संस्कृति संचार' के अभिनव अंक का विमोचन किया।
- इस प्रवास में माननीय श्री जे.पी. नड्डा जी के साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मल्लिका नड्डा, केन्द्रीय शिक्षा मंत्री माननीय श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री बंशीधर भगत, उत्तराखण्ड सरकार में मंत्री श्री मदन कौशिक सहित अनेक गणमान्य पधारे थे।
- स्वागत समारोह के उपरांत सभी शान्तिकुञ्ज पधारे, श्रद्धेया जीजी ने सबका भावभरा स्वागत किया। तत्पश्चात् अतिथियों ने 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर पहुँचकर अतिथियों ने गुरुसत्ता को श्रद्धासिक्त पुष्पाञ्जलि अर्पित की।

महाकाल के तेवर समझें जो समझ नहीं पाएँगे वो पछताएँगे

''महाकाल का युग निर्माण प्रत्यावर्तन अब द्रुतवेग से गतिशील होने जा रहा है। उसके इस अभियान में प्रबुद्ध आत्माओं को महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करनी होगी। जिनकी जड़ता और अनुदारता न छूट सके, उन्हें समय से टकराकर चूर-चूर होने की तैयारी करनी होगी। बीच की कोई स्थिति नहीं। जैसा अब तक चलता रहा है आगे भी वैसा ही ढर्रा चलता रह सकता है, ऐसा किसी को भी नहीं सोचना चाहिए। 'अखण्ड ज्योति' परिवार में बहुत प्रयत्नपूर्वक संस्कारवान प्रबुद्ध आत्माएँ मूल्यवान मणियों की तरह एकत्रित कर एक माला में सँजोई हैं। उनके जीवनोद्देश्य पूरा करने की भूमिका में प्रवेश करने का ठीक यही समय है।'' वाङ्मय 66-7.45

याज्ञवल्क्य यज्ञ अनुसंधान केन्द्र

यज्ञ चिकित्सा से मधुमेह, उच्च रक्तचाप सहित कई जटिल बीमारियों के उपचार एवं रोकथाम हेतु हो रहे हैं शोधकार्य

भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए निरन्तर प्रयत्नशील देवसंस्कृति विश्वविद्यालय में 7 दिसम्बर को 'याज्ञावल्क्य यज्ञ अनुसंधान केन्द्र' का औपचारिक शुभारम्भ हुआ। प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने इस केन्द्र का शुभारंभ करते हुए कहा कि यज्ञ एवं आयुर्वेद हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। यह विषाणु नाशक एवं स्वास्थ्यवर्धक हैं। वर्तमान युग की अनेक जटिल बीमारियों के उपचार के लिए इस दिशा में गहन अनुसंधान की आवश्यकता है। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. विरल पटेल एवं डॉ. वन्दना श्रीवास्तव प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

यज्ञ अनुसंधान केन्द्र में माइक्रो बायोलॉजी, फायटो केमिकल, एन्वॉयरन्मेंटल, प्लांट फिजियोलॉजी, ह्यूमन एलेक्ट्रोफीसिओलॉजी की लैब बनाई गई है। इनमें यज्ञधूम्र से रोगकारक बैक्टीरिया पर प्रभाव का अध्ययन होगा। समिधा एवं औषधियों के यज्ञीय धूम्र का हवा, पानी और मिट्टी पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी एकत्रित की जाएगी। यज्ञधूम्र में सन्निहित तत्वों का विभिन्न मानवीय कोषों तथा शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर होने वाले प्रभाव को देखा जाएगा। वनस्पति एवं कृषि पर पड़ने वाले प्रभावों का भी अध्ययन किया जाएगा। इस हेतु एयर सैम्पलर, रोटरी-इवैपोरेटर, लायोफिलाइजर आदि आधुनिक मशीन लगाई गयी हैं।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी केन्द्र का लोकार्पण करते हुए

- यज्ञावल्क्य यज्ञ चिकित्सा केन्द्र में मानवीय स्वास्थ्य के साथ आध्यात्मिक लाभ, उन्नत कृषि, पर्यावरण शुद्धि पर भी शोधकार्य हो रहे हैं।
- यह केन्द्र ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान में यज्ञ अनुसंधान और पिछले दो वर्षों से देसंविवि में यज्ञोपैथी पर हो रहे शोधकार्यों का औपचारिक शुभारम्भ है। इसके माध्यम से शोध कार्यों को गति देने की योजना है।
- अनेक संकाय के चिकित्सा विज्ञानी (माइक्रोबायोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री, मॉलिक्यूलर बायोलॉजी, ड्रग डेवलपमेंट, थेराप्यूटिक्स, फार्माकोलॉजी, साइकोलॉजी आदि), पर्यावरण विज्ञान, कृषि विज्ञान, पुरातन विज्ञान, इतिहासवेत्ता शोधकार्यों में सहयोग करेंगे।
- यज्ञ अनुसंधान देसंविवि द्वारा प्रकाशित इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल ऑफ यज्ञ रिसर्च (आई.जे.वाय.आर.) में प्रकाशित किए जायेंगे।
- देसंविवि के सात विद्यार्थियों ने अब तक यज्ञ विज्ञान पर पीएच.डी. की है। उनके अनुभवों का लाभ इस केन्द्र को मिलता रहेगा।

यज्ञ चिकित्सा एवं वनौषधियों से मधुमेह, उच्च रक्तचाप, वात रोग, मानसिक रोग, थायराइड जैसे जटिल रोगों पर उपचार में देव संस्कृति विश्वविद्यालय को संतोषजनक परिणाम मिल रहे हैं। इन्हें और प्रभावशाली बनाने के प्रयोग निरन्तर होते रहेंगे।

यू-ट्यूब द्वारा सम्मानित हुआ आपका अपना यू-ट्यूब चैनल

Shantikunjvideo Gayatri Pariwar

- **4 लाख** से अधिक दर्शक (Viewers)
- **4 हज़ार** से अधिक वीडियो
- ऋषि स्तरीय चिंतन
- भारतीय संस्कृति को सतत् प्रोत्साहन,
- सकारात्मक-सृजनात्मकता को प्रोत्साहन

YouTube

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब प्राप्त सम्मान के साथ

इन्हीं विशेषताओं से समृद्ध आपके अपने यू-ट्यूब चैनल 'शान्तिकुञ्जवीडियो गायत्री परिवार' को यू-ट्यूब की ओर से सिल्वर मैडल प्रदान कर सम्मानित किया है। सोशल मीडिया में यह एक अत्यन्त प्रतिष्ठित उपलब्धि है। यू-ट्यूब प्रबन्धकों का आग्रह और हमारा प्रयास है कि दुनिया को एक नई दिशा देने वाला अपना यह चैनल 'गोल्डन मैडल' प्राप्त कर सके।

यह सम्मान दर्शकों की संख्या पर निर्भर होता है। हम थोड़े जागरूक होकर प्रयास करें तो इस मंजिल तक पहुँच सकते हैं। आप अभी तक सदस्य नहीं बने हैं (सबस्क्राइब नहीं किया है) तो अवश्य कर लें तथा अधिक से अधिक लोगों को सदस्य बनाने का प्रयास करें।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार सम्पादन : फोन 9258369413
email : news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 27.12.2020
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23